हिंदी

कक्षा –3

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

संस्करण : 2016

© राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

मूल्य :

पेपर उपयोग : आर. एस. टी. बी. वाटरमार्क
80 जी. एस. एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशक : राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल
2–2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर

मुद्रक :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।
- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

पाठ्यपुस्तक निर्माण
वित्तीय सहयोगः
यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर

प्राक्कथन

बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा में परिवर्तन होना जरूरी है, तभी विकास की गति तेज होती है। विकास में सहायक कई तत्वों के अलावा शिक्षा भी एक प्रमुख तत्व है। विद्यालयीय शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ्यचर्या को समय–समय पर बदलना एक आवश्यक कदम है। वर्तमान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के द्वारा यह स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण क्रियाओं में 'विद्यार्थी' केन्द्र के रूप में हैं। हमारी सिखाने की प्रक्रिया इस प्रकार हो कि विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर समझ कर ज्ञान का निर्माण करे। उसके सीखने की प्रक्रिया को ज्यादा से ज्यादा स्वतंत्रता दी जाए, इसके लिए शिक्षक एक सहयोगी के रूप में कार्य करे। पाठ्यचर्या को सही रूप में पहुँचाने के लिए पाठ्यपुस्तक महत्त्वपूर्ण साधन है। अतः बदलती पाठ्यचर्या के अनुरूप ही पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन कर राज्य सरकार द्वारा नवीन पाठ्यपुस्तक तैयार कराई गई है।

पाठ्यपुस्तक तैयार करने में यह ध्यान रखा गया है कि पाठ्यपुस्तक सरल, सुगम, सुरुचिपूर्ण, सुग्राह्य एवं आकर्षक हो, जिससे विद्यार्थी सरल भाषा, चित्रों एवं विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इनमें उपलब्ध ज्ञान को आत्मसात् कर सकें। साथ ही वह अपने सामाजिक एवं स्थानीय परिवेश से जुड़े तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव, संवैधानिक मूल्यों के प्रति समझ एवं निष्ठा बनाते हुए एक अच्छे नागरिक के रूप में अपने आप को स्थापित कर सके।

शिक्षकों से मेरा विशेष आग्रह है कि इस पुस्तक को पूर्ण कराने तक ही सीमित नहीं रखें, अपितु पाठ्यक्रम एवं अपने अनुभव को आधार बनाकर इस प्रकार प्रस्तुत करें कि बालक को सीखने के पर्याप्त अवसर मिले एवं विषय शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.) उदयपुर पाठ्यपुस्तक विकास में सहयोग के लिए उन समस्त राजकीय एवं निजी संस्थानों, संगठनों यथा एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, राज्य सरकार, बिहार सरकार, उत्तराखण्ड सरकार, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल जयपुर, विद्याभवन उदयपुर का पुस्तकालय एवं लेखकों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशकों तथा विभिन्न वेबसाइट्स के प्रति आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने पाठ्यपुस्तक निर्माण में सामग्री उपलब्ध कराने एवं चयन में सहयोग दिया। हमारे प्रयासों के बावजूद किसी लेखक, प्रकाशक, संस्था, संगठन और वेबसाइट का नाम छूट गया हो तो हम उनके आभारी रहते हुए क्षमा प्रार्थी हैं। इस संबंध में जानकारी प्राप्त होने पर आगामी संस्करणों में उनका नाम शामिल कर लिया जाएगा।

पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु श्री कुंजीलाल मीणा, शासन सचिव, प्रारंभिक शिक्षा, श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव, माध्यमिक शिक्षा एवं आयुक्त राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्, श्री बाबूलाल मीणा, निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, श्री सुवालाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा एवं श्री बी. एल. जाटावत, आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्, जयपुर।

राजस्थान सरकार का सतत् मार्गदर्शन एवं अमूल्य सुझाव संस्थान को प्राप्त होते रहे हैं। अतः संस्थान हृदय से आभार व्यक्त करता है।

इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण यूनिसेफ के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से किया गया है। इसमें सेम्युअल एम., चीफ यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर, सुलग्ना रॉय, शिक्षा विशेषज्ञ एवं यूनिसेफ से संबंधित अन्य सभी अधिकारियों के सहयोग के लिए संस्थान आभारी है। संस्थान उन सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों का, जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य संपादन में सहयोग रहा है, उनकी प्रशंसा करता है।

मुझे इस पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है, साथ ही यह विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और अध्ययन–अध्यापन एवं विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास की एक प्रभावशाली कड़ी के रूप में कार्य करेगी।

विचारों एवं सुझावों को महत्त्व देना लोकतंत्र का गुण है। अतः राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर सदैव इस पुस्तक को और श्रेष्ठ एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत करेगा।

निदेशक

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान

एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संरक्षक	:	विनीता बोहरा, निदेशक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
मुख्य समन्वयक	:	नारायण लाल प्रजापत, उपनिदेशक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
समन्वयक	:	वनिता वागरेचा, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
लेखन समिति	:	यशोदा दशोरा, प्रधानाध्यापिका रा.बा.उ.प्रा.वि. प्रतापनगर प्रथम उदयपुर, (संयोजक)
		डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत, प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. ड्योढ़ी, जयपुर
		तोषी सुखवाल, अध्यापिका, के.जी.बी.वि. मावली, उदयपुर
		विमलेश कुमार शर्मा, अध्यापक रा.प्रा.वि., ढाणी रामगढ़, सवाई माधोपुर
		दिनेश वैष्णव, सन्दर्भ व्यक्ति डाइट, बाराँ
		राजेश गहलोत, प्रधानाध्यापक, आदर्श विद्यामंदिर, पाली
		शिवमृदुल, से.नि. व्याख्याता, चित्तौडगढ़
		मीनाक्षी शर्मा, अध्यापिका, रा.बा.उ.प्रा.वि. जवाहरनगर,उदयपुर
		डॉ. कृष्णकांत चौहान, अध्यापक रा.उ.प्रा.वि. लकापा, सलूम्बर, उदयपुर
		हरिवल्लभ बोहरा, प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. छत्रैल, जैसलमेर
आवरण एवं साज सज्जा	:	डॉ. जगदीश कुमावत, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर
चित्रांकन	:	अशोक शर्मा, स्वतंत्र कलाकार, उदयपुर
तकनीकी सहायक	:	हेमन्त आमेटा, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
		दीपिका तलेसरा, क.लि. एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
		अभिनव पण्ड्या, क.लि. एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
कम्प्यूटर ग्राफिक्स	:	सिमेटिक्स माईनिंग प्रा.लि., देहरादून, उत्तराखण्ड

शिक्षकों से...

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 की रूपरेखा को आधार मानते हुए बच्चों के बौद्धिक, शैक्षणिक, सामाजिक सद्भाव, शारीरिक विकास, जीवन मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावनाओं को विकसित करने सहित भाषा के माध्यम से बालक/बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु कक्षा 3, 4 व 5 के लिए समृद्ध सामग्री का चयन किया गया है।

पाठ्यसामग्री में विशेष रूप से प्रकृति प्रेम, देशप्रेम, भावनात्मक एकता, सामाजिक चेतना, संवेदनशीलता, महिला सशक्तीकरण, जेंडर संवेदनशीलता, सांस्कृतिक गौरव, पर्यावरण संरक्षण, आपसी प्रेम, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, श्रम व कार्य के प्रति सम्मान, लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास, सामाजिक सरोकारों के प्रति सजगता, शिष्टाचार आदि को सम्मिलित किया गया है।

विविधताओं को समेटने हेतु विषयगत एवं विधागत दोनों ही रूपों के समावेश का प्रयास है। इसमें कहानी, कविता, संवाद, आत्मकथा, खेल, वृतांत, निबंध आदि विधाओं को सम्मिलित करने हेतु जीवंत चित्रों के माध्यम से पाठ्यसामग्री को सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है।

भाषाई विकास की समग्रता को ध्यान में रखते हुए पाठ में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ दिए गए हैं और उच्चारण की दृष्टि से स्पष्ट उच्चारण करने हेतु शब्दों का चयन कर यथास्थान अभ्यासार्थ भी दिया गया है।

स्वयं की सोचने की क्षमता व मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिए सोचें और बताएं दिया गया है, जिसके माध्यम से पाठ को ध्यान में रखकर प्रश्नों का मौखिक उत्तर दे सकें, ऐसा प्रयास किया गया है। साथ ही खोजने की प्रवृत्ति और लिखित अभिव्यक्ति के विकास हेतु 'रिक्त स्थानों की पूर्ति' को दिया गया है। पाठ में वर्णित सभी संदर्भों का पुनः स्मरण कर स्वविवेक के आधार पर प्रश्नों के लिखित उत्तर दे सकें।

'भाषा की बात' के माध्यम से पाठ में प्रयुक्त व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान हो सकेगा। व्याकरण संबंधी जिज्ञासा का समाधान शिक्षक के माध्यम से कराया जाना अपेक्षित रहेगा।

बच्चों में तार्किक चिंतन का विकास अनुभवों को व्यापकता देने, परिवेश से जोड़ने, कल्पनाओं को विस्तार देने, संकलन की प्रवृत्ति, विषय वस्तु एवं बाहरी परिवेश के माध्यम से सृजनशीलता के विकास हेतु भी विविधरूपेण गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है।

बहुभाषिकता को सुदृढ़ संसाधन के रूप में समझते हुए हिंदी भाषा के शब्दों का सरलतम रूप एवं स्थानीय बोली के शब्दों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत पाठ्यसामग्री में विविधता एवं रोचकता बढ़ाने के लिए कुछ रचनाएँ पढ़ने के लिए दी गई हैं। शिक्षक इन्हें बच्चों को पढ़ने का आनंद लेने दें, आवश्यकतानुसार सहयोग करें,

परंतु उन पर प्रश्न नहीं पूछे।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाते हुए शिक्षक एक मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वाह करें और बालकों को स्वयं करके सीखने के अवसर अधिक से अधिक प्रदान करें।

शिक्षक/शिक्षिका से अपेक्षा है कि बच्चों में भाषा दक्षता के विकास के लिए पुस्तक के अतिरिक्त स्वयं के ज्ञान एवं अनुभव का यथेष्ट उपयोग करते हुए कार्य करेंगे।

उनसे यह भी अपेक्षा है कि वे अध्यापन के दौरान अपने और बालकों के परिवेश की अनदेखी न करें। परिवेश से जोड़ने के लिए चाट्र्स, चित्र और संबद्ध शिक्षण सामग्री का उपयोग करें। बच्चों से अपने निर्देशन में ऐसी सामग्री तैयार भी करवाएँ और स्वयं भी पहल करें। बालगीत, स्थानीय गीत, स्थानीय कला, चित्रांकन, चित्रकथा इत्यादि के प्रयोग को बढ़ावा दें। इन विधाओं का प्रयोग प्रस्तुत पुस्तक में यत्किंचित रूप से किया गया है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	पृष्ठ सं०
1	देश की माटी	कविता	1
2	मीठे बोल	लोककथा	4
3	शिष्टाचार	निबन्ध	9
	केवल पढ़ने के लिए (विनती)	कविता	
4	समय सुबह का	कविता	15
5	आओ खेलें खेल	निबंध	20
6	आदमी का धर्म	संवाद पाठ	26
	केवल पढ़ने के लिए (कबड्डी)	कविता	
7	कलाकार का असंतोष	कहानी	32
8	गीत यहाँ खुशहाली के	कविता	37
9	मैं सड़क हूँ	आत्मकथा	42
	केवल पढ़ने के लिए (कंजूस सेठ)	लोककथा	
10	काठ की पुतली: नाचे, गाएँ	संवाद–पाठ	51
11	अपना देश	कविता	60
12	साहसी बालिका	कहानी	64
	केवल पढ़ने के लिए (अपनाओ अच्छी आदतें)	कविता	
13	अजमेर की सैर	यात्रा वृत्तांत	70
14	अब तक बहुत बह चुका पानी	कविता	79
15	अटल ध्रुव	कहानी	83
	केवल पढ़ने के लिए (पतंगों का मौसम)	कविता	
16	बताओ मैं कौन हूँ	आत्म कथा	91
	चित्रकथा (बंदर एवं बिल्ली)	कहानी	

1 देश की माटी

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल ।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

देश के घर और देश के घाट।
देश के वन और देश के बाट।
सरल बनें प्रभु, सरल बनें।।

देश के तन और देश के मन।
देश के घर के भाई–बहन।
विमल बनें प्रभु, विमल बनें।।

देश की इच्छा, देश की आशा।
देश की शक्ति, देश की भाषा।
एक बनें प्रभु, एक बनें।।

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

निर्देश : भारत देश की विशेषताओं पर चर्चा करें। कविता को सस्वर गाएँ और गवाएँ।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

सरस – रसीला, मोहक
घाट – तट के आस–पास का सीढ़ीदार स्थान
बाट – रास्ता
विमल – निर्मल, स्वच्छ

उच्चारण के लिए

प्रभु, देश, भाई–बहिन,

सोचें और बताएँ

1. सरस बनाने के लिए किसको निवेदन किया गया है ?
2. हमारा तन और मन किसका बताया गया है ?
3. वन और बाट कैसे होने चाहिए ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

(भाई–बहन, सरस, इच्छा, फल)

(क) हवा देश की देश के .... ।
(ख) सरस बनें प्रभु .... बनें।
(ग) देश के घर के .... ।
(घ) देश की .... देश की आशा।

2 देश की माटी व जल कैसे होने चाहिए ?
3 वन और बाट से क्या आशय है ?
4 विमल बनने के लिए किसको कहा गया है ?
5 तन और मन का देश से क्या संबंध है ?
6 किस–किसके लिए एक बनने को कहा गया है ?

भाषा की बात

- नीचे कुछ शब्द और उनके विपरीत अर्थ वाले शब्द दिए जा रहे हैं, उन्हें रेखा खींचकर मिलाएँ–

आशा	विदेश
इच्छा	नीरस
शक्तिशाली	निराशा
देश	अनिच्छा
सरस	कमजोर

यह भी करें–

- प्रस्तुत कविता में देश की माटी और देश का जल प्रभु से सरस बनाने के लिए कहा गया है, इसी प्रकार देश की क्या–क्या चीजें कविता में कही गई है तथा प्रभु से उनके लिए क्या विनती की गई है सूची बनाएँ।

नाम	विशेषताएँ

- उक्त कविता को हाव–भाव के साथ अपनी कक्षा में सुनाएँ, 'सरस बनें प्रभु सरस बनें' .... ऐसे ही कविता को आगे बढ़ाएँ

देश की नदियाँ देश के घर,
स्वच्छ बनें प्रभु स्वच्छ बनें ।

जीवन की महत्त्वाकांक्षाएँ बालकों के रूप में आती है।

(रवीन्द्रनाथ टैगोर)

2 मीठे बोल

एक खरगोश था। वह घूमता हुआ बाजार में पहुँचा। उसकी नज़र गुड़ की भेलियों पर पड़ी। वह सोचने लगा, ''कितना अच्छा हो मुझे थोड़ा गुड़ खाने को मिल जाए। पर कैसे ? चुरा लूँ। नहीं, नहीं। चोरी करना बुरी बात है क्यों नहीं दुकानदार से माँग लूँ ? वह जरूर गुड़ दे देगा।'' वह दुकानदार के पास गया और बोला, ''आप दयालु हैं। दानी हैं। जीवों पर दया

करते हैं। आपका कारोबार बढ़े। क्या आप मुझे थोड़ा गुड़ देंगे ?''

खरगोश की बात सुनकर दुकानदार खुश हो गया। उसने उसे गुड़ दे दिया। खरगोश खुशी से उछलता हुआ जंगल की तरफ भागा। वह

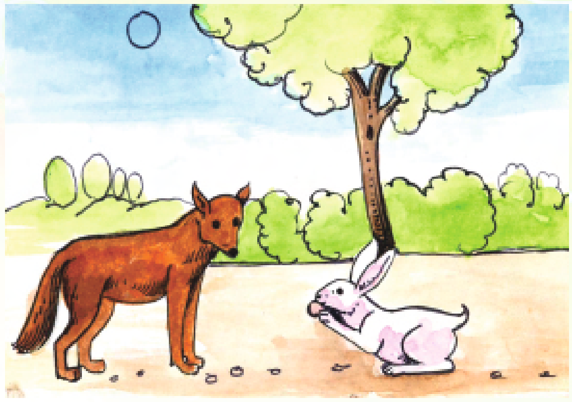

पेड़ के नीचे बैठकर गुड़ खाने लगा।

इतने में एक लोमड़ी वहाँ आई। उसको देखकर खरगोश ने गुड़ छिपा लिया। लोमड़ी बहुत चालाक थी। उसने गुड़ को देख लिया था। वह बोली, ''तुम गुड़ कहाँ से लाए ? बताओ, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगी।''

खरगोश ने कहा, ''मुझे मत मारो। मैं बताता हूँ। बाजार में एक दुकान पर खूब सारा गुड़ रखा है। तुम वहाँ जाना। दुकानदार से माँग लेना। वह तुम्हें भी गुड़ दे देगा।''

लोमड़ी बोली ,"अब चुप रहो मुझे ज्यादा मत समझाओ ।"

लोमड़ी बाजार की तरफ चल दी। उसने गुड़ का ढेर देखा। गुड़ देखकर सोचने लगी। खरगोश तो मूर्ख है। थोड़ा सा गुड़ लेकर ही वह खुश हो गया लेकिन मैं उसकी तरह निर्बल नहीं हूँ। दुकानदार को धमकाकर बहुत सारा गुड़ ले लूँगी।

वह दुकानदार के पास गई और अकड़कर बोली, दुकानदार, तुम बेईमान हो। सामान कम तोलते हो। मिलावट करते हो। मुझे गुड़ की भेली दो, नहीं तो मैं तुम्हारी

शिकायत करूँगी।''

दुकानदार सोचने लगा, यह लोमड़ी धूर्त है। मुझे धमकी दे रही है। डरा कर गुड़ माँगती है। अभी मजा चखाता हूँ। वह बोला, ''बैठो, बैठो, मैं तुम्हें गुड़ देता हूँ।''

लोमड़ी खुश हो गई।

दुकानदार अंदर गया। उसने गुड़ का बोरा देखा, जिसमें बहुत सारे चींटे थे। वह उसे उठा लाया और लोमड़ी से बोला, ''लो, इसमें से चाहे जितना गुड़ ले लो।''

लोमड़ी ने झट से बोरे में हाथ डाला। हाथ डालते ही चींटे उसके हाथ पर चिपक गए और काटने लगे। उसने झट से अपना हाथ खींचा और जोर– जोर से जमीन पर पटकने लगी। पटकने से हाथ पर चोट लग रही थी। दर्द भी होने लगा, पर चींटे नहीं छूटे।

वह जंगल की ओर भागते हुए चिल्लाई, नहीं चाहिए तेरा गुड़। तेरा गुड़ तो खारा है।

मीठे बोल, होते अनमोल

निर्देश –बालकों को पात्र बनाकर इस कहानी को अभिनय के रूप में प्रस्तुत करवाएँ

अभ्यास कार्य

शब्द– अर्थ

दयालु	–	दया करने वाला
दानी	–	दान करने वाला
कारोबार	–	कार्य, व्यापार
निर्बल	–	कमजोर
बेईमान	–	झूठा
धूर्त	–	चालाक
अकड़ना	–	घमंड करना
दर्द	–	पीड़ा

उच्चारण के लिए

निर्बल, धूर्त, दर्द, अकड़कर, अंदर, चींटे, मूर्ख, शिकायत

सोचें और बताएँ

1. खरगोश को गुड़ खाते हुए किसने देखा ?
2. लोमड़ी बाजार की तरफ क्यों गई ?
3. दुकानदार ने लोमड़ी के बारे में क्या सोचा ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

   (जंगल, धूर्त, निर्बल, मूर्ख)

   (क) मैं उसकी तरह .... नहीं हूँ।

   (ख) यह लोमड़ी .... है।

   (ग) वह ....की ओर भागते हुए चिल्लाई।

   (घ) खरगोश तो .... है।

2. किसने कहा–

   (क) आप बहुत दयालु हैं।

(ख) मैं निर्बल नहीं हूँ।

(ग) बैठो–बैठो, मैं तुम्हें गुड़ देता हूँ।

3. खरगोश ने गुड़ की भेलियों को देखकर क्या सोचा ?
4. लोमड़ी ने दुकानदार से क्या–क्या कहा ?
5. लोमड़ी की बातें सुनकर दुकानदार ने क्या किया ?
6. दुकानदार के स्थान पर आप होते तो लोमड़ी की बातें सुनकर क्या करते ?

भाषा की बात

पढ़ें और समझें

- पाठ में धूर्त, मूर्ख आदि शब्द आए हैं, इनमें 'र' वर्ण का हलन्त रूप 'र्' आगे वाले वर्ण पर रूप बदल कर लिखा गया है, जैसे– धूर्त का रूप धूर्त हुआ, इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों को पढ़ें और समझें।

(क)	धू	+	र्	+	त	(र्त)	=	धूर्त
(ख)	द	+	र्	+	द	(र्द)	=	दर्द
(ग)	मू	+	र्	+	ख	(र्ख)	=	मूर्ख
(घ)	पू	+	र्	+	व	(र्व)	=	पूर्व

- एक बोलें सब लिखें

  लोमड़ी ने झट .... चींटे नहीं छूटे।

यह भी करें–

- कहानी याद करें और कक्षा में सुनाएँ।
- लोमड़ी के स्थान पर आप होते तो क्या करते ?
- हमें क्या करना चाहिए व क्या नहीं करना चाहिए ?

सच बोलें	झूठ न बोलें

3

शिष्टाचार

मगन अच्छा लड़का है। मोहल्ले के सब लोग मगन को प्यार करते हैं। सभी उसकी बहुत बड़ाई करते हैं। मगन सबकी आँखों का तारा है। आखिर ऐसा क्या है मगन में कि सब लोग उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते ? मगन कभी झूठ नहीं बोलता। वह किसी की वस्तु नहीं चुराता। बुरी संगत से सदैव बचता है। अनुपयोगी वस्तुओं को इधर–उधर नहीं फेंकता। हमेशा कचरा –पात्र में ही कचरा डालता है।

कभी अपने माता–पिता की आज्ञा नहीं टालता। यदि कोई पड़ोसी भी काम बता दे तो मना नहीं करता। वह घर आए अतिथियों का स्वागत बड़े उत्साह से करता है। कभी उन्हें भार नहीं समझता। वह विनम्रता से बात करता है। कड़वा बोल कर किसी का दिल नहीं दुखाता।

मगन अपने से बड़ों के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करता है। बड़ों की बात को कभी नहीं काटता। हमेशा शिष्ट भाषा का प्रयोग करता है। कोई उससे कुछ पूछता है तो नम्रता से उत्तर देता है।

मगन अपने गुरुजी का बहुत सम्मान करता है। वह उनका आदर से अभिवादन करता है। कक्षा में उनकी कुर्सी पर कभी नहीं बैठता। कभी किसी की मजाक नहीं उड़ाता। किसी कारण से गुरुजी कक्षा में नहीं

आते तो उधम नहीं मचाता। अपना पाठ याद करता रहता है। वह हमेशा शाला के नियमों का पालन करता है।

मगन जब कभी बाग–बगीचे में घूमने जाता है तो पेड़–पौधों की पत्तियाँ नहीं नोचता। व्यर्थ में कभी फूल नहीं तोड़ता। कहीं भी किसी जानवर को नहीं सताता। वह सभी के प्रति सहानुभूति रखता है। रेलवे स्टेशन हो या बस–अड्डा, सड़क, पार्क, सिनेमाघर हो या बाग–बगीचा, मगन शिष्टाचार कभी नहीं भूलता।

कभी–कभी कुछ लोग शिष्टाचार का दिखावा करते हैं। वे सोचते हैं, ऐसा करने से उन्हें अच्छा समझा जाएगा। लोगों को दिखाने के लिए किया गया शिष्टाचार टिकाऊ नहीं होता। कोशिश यह करनी चाहिए कि शिष्टाचार हमारे स्वभाव की विशेषता बन जाए।

प्रायः बस या रेल में चढ़ते

समय लोग धक्का–मुक्की करते हैं। इससे किसी को चोट लग सकती है। ऐसे अवसरों पर हमें अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी चाहिए। वृद्ध तथा कमजोर लोगों की मदद करनी चाहिए।

शिष्टाचार ऐसा फूल है, जिसकी सुगंध हमेशा अपने वातावरण को सुगंधित रखती है।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

अनुपयोगी	–	बेकार, व्यर्थ
अतिथि	–	मेहमान
अभिवादन	–	श्रद्धापूर्वक नमस्कार करना
सहानुभूति	–	संवेदना, दया
संगत	–	साथ, संग रहना
शिष्टाचार	–	सभ्य आचरण व व्यवहार

उच्चारण के लिए

विनम्रता, वृद्ध, सुगंध, फेंकना, हमेशा, सम्मान, प्रतीक्षा, मोहल्ला,स्वागत।

सोचें और बताएँ

1. मगन कैसा लड़का है ?
2. मगन अतिथियों के साथ कैसा व्यवहार करता है ?
3. शिष्टाचार की तुलना किससे की गई है ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

(क) मगन कभी .... नहीं बोलता। (सच / झूठ)

(ख) मगन .... से बात करता है। (विनम्रता / उद्दण्डता)

(ग) मगन बड़ों के साथ .... का व्यवहार करता है। (आदर / अनादर)

(घ) वृद्ध तथा कमजोर लोगो की मदद .... चाहिए।

(नहीं करनी / करनी)

2. मगन सबको अच्छा क्यों लगता है ?
3. मगन में शिष्टाचार की कौन–कौनसी आदतें हैं ?
4. बड़ों के साथ बात करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
5. बाग–बगीचे में घूमते समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
6. शिष्टाचार को कैसा फूल बताया गया है और क्यों ?

भाषा की बात

- 'मगन सबकी आँखों का तारा है।' वाक्य में 'आँखों का तारा होना' का अर्थ है सबका प्यारा होना ऐसे विशिष्ट अर्थ वाले रूढ़ वाक्यांशों को मुहावरा कहते हैं। आप भी पाठ में आए निम्न मुहावरों को जानकर उनका सही अर्थ के साथ मिलान करें–

(क)	दिल दुखाना	बीच में बोलना।
(ख)	बात काटना	उपहास करना।
(ग)	हँसी उड़ाना	शैतानी करना।
(घ)	उधम मचाना	दुखी करना।

- ष, श, स वर्णों का उच्चारण अलग–अलग होता है। निम्नलिखित शब्दों में इनका प्रयोग हुआ है, शिक्षक की सहायता से उच्चारण करें।

श– शिष्टाचार, शत्रु, शहर, शपथ।

ष– षट्कोण, शोषण, पोषक, वर्षा।

स – सत्य, सदाचार, समर्पण, सहयोग।

- 'मगन अच्छा लड़का है। मोहल्ले के सब लोग मगन को प्यार करते हैं।' इन पंक्तियों में मगन–व्यक्ति, प्यार–भाव, लड़का–जाति व मोहल्ला–स्थान विशेष का नाम हैं। इस प्रकार किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। आप भी नीचे लिखे अनुच्छेद में से संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखें।

  'मगन सबकी आँखों का तारा है। आखिर ऐसा क्या है मगन में कि सब लोग उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते ? वह हमेशा कचरा–पात्र में ही कचरा डालता है।'

  संज्ञा शब्द ....

- सही शब्द लिखकर जोड़े बनाएँ

  (मुक्की, पिता, दौड़, बगीचा, पौधे, आना)

  इधर – उधर

  क) जाना .... (ख) माता ....

  (ग) भाग .... (घ) बाग ....

  (ङ) पेड़ .... (च) धक्का ....

यह भी करें –

- शिष्टाचार की बातों की सूची बनाएँ

क्र. सं.	शिष्टाचार की बातें

जीवन का एक क्षण करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ देने पर भी नहीं मिलता है।

–चाणक्य

विनती

हे प्रभु, आप जगत के पालक,
हम हैं छोटे–छोटे बालक।
पढ़ें–लिखें और बने महान,
हमको ऐसा दो वरदान।

हाथ जोड़कर करते विनती,
सीखें सद्गुण अक्षर गिनती।
एक दूजे के आएँ काम,
हमको ऐसा दो वरदान।

मातृभूमि का मान बढ़ाएँ,
जीवन अपना सफल बनाएँ।
इस पर वारें तन–मन प्राण,
हमको ऐसा दो वरदान।

4 समय सुबह का

जागो, आया समय सुबह का।
बाग–बगीचा आँगन महका।।

नहीं अँधेरा नहीं धुँधलका,
आई सुबह लिए उजियाली।
आसमान रंग गया सुनहला,
फैल गई पूरब में लाली।।

ऊँची शाखाओं को छूती,
किरणें आ उतरी हैं भू पर।
ओस–कणों को चुगा उन्होंने,
सभी जगह से एक–एक कर।।

फीका पड़ा चाँद का मुखड़ा,
नहीं चाँदनी रही यहाँ अब।
सारी रात चमकने वाले,
तारे जाने गए कहाँ सब।।

मुरगों ने उठ बाँग लगाई,
चहक उठीं चिड़ियाँ मन भाई।
कुकड़ू कूँ चीं–चीं आवाजें,
गूँज उठी कानों में भाई।।

बाग–बगीचों अमराई में,
कूक उठी है कोयल काली।
फूलों से भर अपनी झोली,
फूली नहीं समाई डाली।।

गुन–गुन कर भँवरे मँडराए,
कलियाँ जागी ले अँगड़ाई।
रंग–बिरंगे पंखों वाली,
कई तितलियाँ उड़–उड़ आईं।।

छोड़ बिछौना उठ बैठो सब,
आलस छोड़ो, आँखें खोलो।
दाँत मलो, मुँह हाथ पाँव धो,
सभी साफ सुथरे अब हो लो।

हुआ उजाला हलका–हलका।
जागो, आया समय सुबह का।।

अभ्यास कार्य

शब्द – अर्थ

आँगन	–	घर में खुला स्थान
लाली	–	ललाई / लालिमा
उजियाली	–	रोशनी
ओस–कण	–	ओस की बूंदें
चहकना	–	चहचहाना

उच्चारण के लिए

किरणे, रंग–बिरंगी, गूँज, चाँद, मुँह, पंछी

सोचें और बताएँ

1. सुबह के समय कौन–कौन महका ?
2. कानों में किसकी आवाजें गूँजने लगी ?
3. अँगड़ाई लेकर कौन जागी ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

   (मुरगों, चाँद, कोयल काली, आँगन)

   (क) बाग–बगीचा .... महका।

   (ख) कूक उठी है .... ।

   (ग) फीका पड़ा .... का मुखडा।

   (घ) .... ने उठ बाँग लगाई।

2. कौन कैसी बोली बोलता है, मिलान करें –

(क) मुर्गा	कुहू–कुहू
(ख) कोयल	टीं–टीं
(ग) चिड़िया	कुकड़ू–कूँ
(घ) भौंरा	काँव–काँव
(ड़) कौआ	चीं–चीं
(च) तोता	गुन – गुन

3. सुबह उठकर हम क्या–क्या काम करते हैं ?
4. प्रातःकाल कौन–कौनसे पक्षियों की आवाज सुनाई देती हैं ?
5. पूरब में लाली किस समय फैलती है ?
6. किरणों ने भू पर उतरकर क्या किया ?
7. 'फूली नहीं समाई डाली' से क्या तात्पर्य है ?
8. 'फीका पड़ा चाँद का मुखड़ा' से क्या आशय है ?

भाषा की बात

- पाठ में आए फूल को पुष्प, कुसुम, सुमन आदि अनेक नामों से जाना जाता है, ऐसे ही किसी शब्द के समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें।

रात – ....

चाँद – ....

आँख – ....

आसमान – ....

यह भी करें–

- इस पाठ के आधार पर सुबह का वर्णन अपने शब्दों में लिखकर कक्षा में सुनाएँ।
- सारणी की पूर्ति करें

फूल व फल का नाम	रंग का नाम
गुलाब	लाल

- आप अपनी मनपसंद के चार फूल या फलों के चित्र बनाकर रंग भरें।

निर्देश :– कविता पढ़ाने से पूर्व प्रातःकालीन दृश्य को आधार बनाकर फूलों,पक्षियों आदि पर बालकों से चर्चा करें।

छोटों के साथ सद्व्यवहार से ही मनुष्य अपने बड़प्पन को प्रकट करता है।
– अज्ञात

5 आओ खेलें खेल

रीना ने ममता को आवाज़ लगाई। ममता समझ गई कि खेलने का समय हो गया है। माँ से कहकर वह दौड़ी आई। उसने उसको अपनी नई रस्सी दिखाई।

सामने से राकेश, रूपा, शमीम, अंजू, सतीश, विमल सभी आते दिखाई दिए। एक–एक कर सब बच्चे पार्क में इकट्ठे हो गए। कोई गेंद लाया, कोई रस्सी, तो कोई रिंग। आशीष नहीं आया था।

विमल बोला, ''मैं आशीष को बुला लाता हूँ'' वह दौड़ता हुआ आशीष के घर गया और पुकारा, ''आशीष! ओ! आशीष, सब आ गए हैं। जल्दी चलो।" आशीष ने कहा, ''आज मेरे चचेरे भाई–बहिन आए हैं, वे भी हमारे साथ खेलेंगे।" विमल बोला, ''अरे वाह! फिर तो बड़ा मज़ा आएगा।"

सब इकट्ठे हो गए। आशीष बोला, ''कोई ऐसा खेल खेलें कि सब

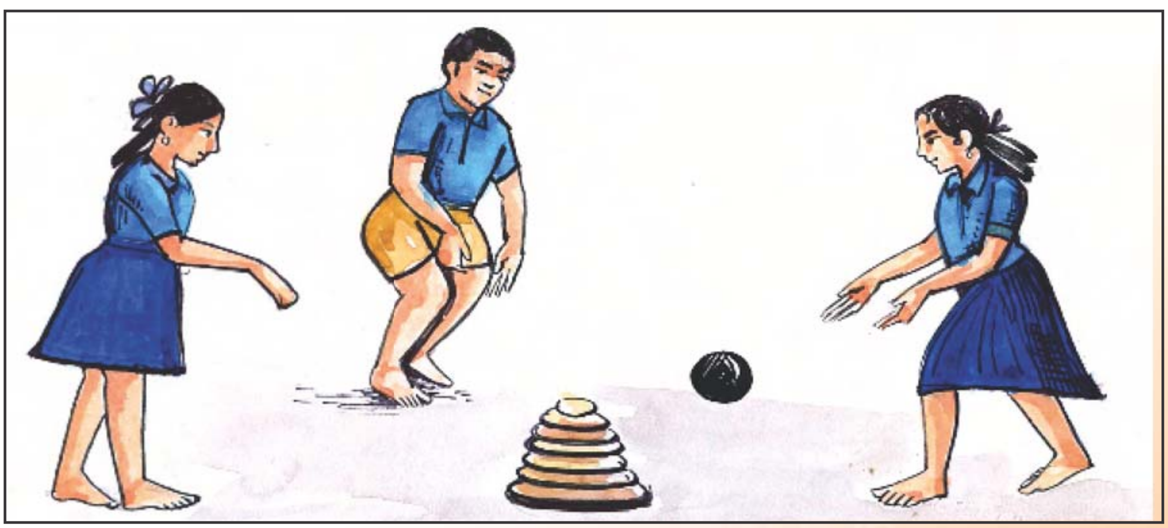

साथ खेल सकें। सब सोचने लगे। आँखमिचौनी, हत्ताताली या सतोलिया। रीना बोली, ''मैं तो आज रस्सी कूदूँगी। देखो! नई रस्सी।''

सब रस्सी कूदने का खेल खेलने लगे। रीना और ममता ने रस्सी के दोनों छोर पकड़े। कुछ दूरी पर खड़ी होकर उसे घुमाने लगी। बीच में राकेश कूदने लगा कूदते हुए उसका पाँव रस्सी से छू गया। वह आउट हो गया। अब वह रीना की जगह जाकर रस्सी घुमाने लगा और रीना कूदने लगी। इस तरह बारी–बारी से ममता और विमल ने भी रस्सी कूदी।

फिर विमल, रानी, सतीश और उसके मित्रों ने सतोलिया खेलने की सोची। विमल घर से सात वृत्ताकार पत्थर लाया। एक के ऊपर एक जमाकर बीच में रखे। दो दल बनाए। इस खेल में एक दल गेंद से सतोलिया गिराकर भागता है। दूसरा दल पहले दल के खिलाडियों को गेंद मारता है। सतोलिया गिराने वाला दल वापस सतोलिया जमाता है। गेंद लग जाने पर वह खिलाड़ी आउट समझा जाता है। वह गेंद से अपना बचाव

करते हुए सतोलिया जमाने की कोशिश करता है।

खेल शुरू हुआ। रानी पहले दल में थी। ज्योंही वह पत्थर जमाने आई, विमल ने उसे गेंद मार कर आउट कर दिया। फिर दूसरे दल के विमल ने सतोलिया गिराया। राकेश गेंद झपटने लगा लेकिन गेंद चली गई। गेंद लेकर कोई आता तब तक विमल ने सतोलिया जमा दिया। मारे खुशी के सब तालियाँ बजाने लगे थोड़ी देर खेलने के बाद सब थक कर बैठ गए।

रीना, विमला और अन्य सहेलियाँ भी रस्सी कूदकर थक गई लेकिन खेलने से मन नहीं भरा। सबने कहा, ''अब हम एक साथ खेलते हैं।'' शमीम ने कहा, कोड़े वाला खेल खेलें। हाँ! कहते सभी उठ खड़े हुए।

सबने एक साथ मिल कर गोल घेरा बनाया और बैठ गए। सतीश ने रूमाल का कोड़ा बनाया। वह कोड़ा छिपाकर यह कहते हुए घेरे के बाहर घूमने लगा, ''कोड़ा है संभाल भाई, पीछे देखे मार खाई। '' सभी बच्चे अपने हाथ पीछे करके कोड़ा संभालने लगे। सतीश ने चुपके से कोड़ा अंजू के पीछे डाल दिया। अंजू को पता ही नहीं चला। सतीश घेरे के चक्कर लगा कर आया और अंजू के पीछे से कोड़ा उठाकर हल्के–हल्के उसे मारने लगा। अंजू घेरे के चारों तरफ दौड़ने लगी। फिर अपनी जगह आ कर बैठ गई। सब को खूब मजा आया।

देर तक खेल चलता रहा रात होने लगी। कल शाम को फिर आने की बात कहकर सब घरों की तरफ दौड़ पड़े।

निर्देश– इस पाठ में विभिन्न प्रकार के आनंददायी खेल दिए गए हैं, इनका संबंध स्वास्थ्य शिक्षा के पाठ्यक्रम से है,जिसमें कूदना, दौड़ना, भागना ,पकड़ना, फेंकना जैसी क्रियाएँ करवाई जानी है। जीवन में खेलकूद संबंधी शारीरिक क्रियाओं का महत्त्व समझाइए। खेल भावना से आपसी सहयोग, अनुशासन, सद्भाव, धैर्य, साहस आदि गुणों का विकास करें।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

हत्तताली	–	तालियाँ बजाना।
पुकारा	–	आवाज दी
पार्क	–	बगीचा
दल	–	समूह
वृत्ताकार	–	गोल आकार
आउट	–	खेल से बाहर होना
कोड़ा	–	कपड़े का सोटा

उच्चारण के लिए

बच्चे, रस्सी, वृत्ताकार, संभाल, चक्कर, हल्का

सोचें और बताएँ

1. खेलने के लिए सब लोग कहाँ इकट्ठे हुए ?
2. सतोलिया के खेल में वृत्ताकार पत्थर कितने होते हैं ?
3. रस्सी का खेल कौन–कौन खेल रहे थे ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(आउट, रस्सी, खेल, सात)

(क) रीना बोली, मैं तो आज............... कूदूँगी।

(ख) वह .... हो गया।

(ग) विमल घर से .... वृत्ताकार पत्थर लाया।

(घ) देर तक .... चलता रहा।

2. सतोलिया का खेल कैसे खेला जाता है ?
3. लड़कियाँ कौनसा खेल खेलने लगी ?
4. सबने मिलकर कौनसा खेल खेला ?
5. ''कोड़ा है संभाल भाई, पीछे देखे मार खाई'' कैसे खेला जाता है ?

भाषा की बात

- 'राकेश कूदने लगा, कूदते हुए उसका पाँव रस्सी से छू गया।' यहाँ 'राकेश' शब्द के स्थान पर दूसरी बार 'उसका' शब्द का प्रयोग हुआ है, इसी प्रकार संज्ञा के स्थान पर काम आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे– मैं, वह, तुम, हम इसी आधार पर नीचे दिए गए शब्दों को वर्गानुसार लिखो।

रीना, वह, रस्सी, सब, गेंद, मैं, तुम, सतोलिया, पंखा, गाय, वे

संज्ञा	सर्वनाम

- मूल शब्द के साथ 'ना' जोड़ने से उसका क्रिया रूप बन जाता है, जैसे– दौड़ से दौड़ना। आप भी निम्नलिखित मूल शब्दों में 'ना' लगाकर शब्दों के क्रिया रूप बनाएँ

खा + ना = खाना	भाग +
लिख +	हँस +
देख +	जमा +
कूद +	आ +
रख +	जा +

यह भी करें

- पाठ में आए खेलों को खेल के कालांश में खेलें।
- अपने शिक्षक/शिक्षिका से अन्य खेलों के बारे में चर्चा करें।

किसी के गुणों की प्रशंसा करने के बजाय उन्हें अपनाने का प्रयत्न करो। —अज्ञात

6

आदमी का धर्म

एक नगर में एक धनी आदमी रहता था। उसके कोई संतान नहीं थी। एक दिन एक बालक घर के दरवाजे पर आया। उस समय वह आदमी अपने बरामदे में बैठा हुआ समाचार –पत्र पढ़ रहा था।

बालक	:	मुझे पाँच रुपये दे दो बाबा !
आदमी	:	इतने रुपये ?
बालक	:	हाँ बाबा! बीमार माँ के लिए दवा खरीदनी है।
आदमी	:	तुम्हारी जाति क्या है ?
बालक	:	मांगने वाले की क्या जाति हो सकती है, बाबा ?
आदमी	:	और धर्म ?
बालक	:	उसका धर्म भी नहीं होता।

आदमी : तो अपना नाम ही बताओ। मैं जान–पहचान बिना किसी को कुछ नहीं देता।

बालक : मेरा नाम भारत सिंह है।

आदमी : इतना अच्छा नाम! क्षत्रिय जान पड़ते हो।

बालक : नहीं। मैं केवल भारत हूँ। सिंह मेरी पहचान है।

आदमी : सिंह तुम्हारी पहचान है, सो कैसे ?

बालक : मैं भारत का निवासी हूँ इसलिए भारत हूँ। सिंह मेरे राष्ट्र का निशान है।

आदमी : अच्छा, अब समझा। तुमको भारत से प्रेम है। फिर मुझसे रुपये क्यों माँग रहे हो ? इतना बड़ा देश पड़ा है, कहीं भी जाकर माँग लो।

बालक : आप भी भारतीय हैं। मेरे पिता के समान हैं, इसलिए आपसे रुपये माँगने का मैंने साहस किया।

आदमी : बड़े बातूनी हो! ...मैं यों किसी को भीख नहीं देता।

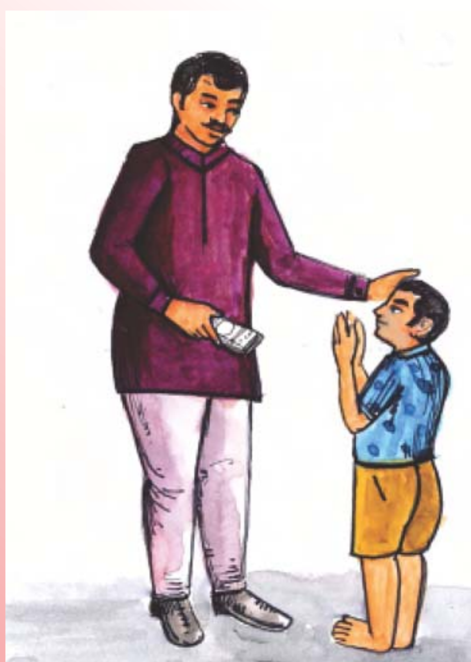

बालक : तो उधार ही दे दीजिए।

आदमी : उधार भी नहीं दे सकता, क्योंकि मैं तुम्हें पहचानता ही नहीं।

बालक : आप मुझ पर विश्वास कीजिए। माँ स्वस्थ हो जाएगी, तब मैं लौटा दूँगा।

आदमी : तो अपने पिता को भेजो।

बालक : वे इस दुनिया में नहीं रहे।

आदमी : तो क्या तुम एक अनाथ बालक हो ?

बालक : अनाथ मत कहिए बाबा! मेरी माँ मुझे पालती है।

आदमी : (रुपये निकालकर देता हुआ) अच्छा, ये लो पाँच रुपये। अब तुम इन्हें लौटाने मत आना।

बालक : नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। माँ के ठीक होते ही लौटा दूँगा। विश्वास की रक्षा मेरा धर्म है।

आदमी : लेकिन तुम तो कहते थे कि तुम्हारा कोई धर्म नहीं।

बालक : बाबा! नाम वाला मेरा कोई धर्म नहीं। मैं मनुष्य के गुणों को ही धर्म मानता हूँ, जैसे–कर्त्तव्यपालन, प्रेम, ईमानदारी, दया, सत्य, सेवा।

आदमी : अरे बालक! छोटे मुँह बड़ी बात मत करो। यह धर्म नहीं है।

बालक : मैं जिस पाठशाला में पढ़ता हूँ, उसमें मेरे गुरु जी ने सब को यही सिखाया है। तभी से सबसे प्रेम करने को मैंने अपना धर्म माना है। सब की सेवा करना मेरा धर्म है।

आदमी : बालक! तुम्हारी बातें सुनकर मेरा हृदय सहज प्रेम से भर गया है। आज से तुम मेरे पुत्र के समान हो। जाओ माँ का इलाज कराओ। मेरी सेवा की जरूरत पड़े तो मुझे बुला ले जाना। सचमुच दया, प्रेम, करुणा, सत्य, सेवा, कर्त्तव्य–पालन ये ही मनुष्य के सबसे बड़े धर्म है। ईश्वर तुम्हारी माँ की रक्षा करें। (बालक जाता है।)

निर्देश :– इस पाठ को प्रस्तुत करते समय छात्रों को कर्त्तव्य पालन, प्रेम, दया, सत्य, सेवा आदि नैतिक गुणों के महत्त्व को बताएँ जिससे छात्र नैतिकता और अनैतिकता में भेद करना जानें और नैतिक बातों में उनकी रुचि उत्पन्न हो।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

आवश्यकता	–	जरूरत
मुँहफट	–	अधिक बोलने वाला
साहस	–	हिम्मत
अनाथ	–	जिसके माता–पिता मर चुके हो
सहज	–	आसानी से

उच्चारण के लिए

आवश्यकता, सत्य, विश्वास, स्वस्थ

सोचें और बताएँ

1. बालक पैसे माँगने किसके पास गया ?
2. बालक उधार किसके लिए माँग रहा था ?
3. बालक ने अपना नाम क्या बताया ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

   (समाचार –पत्र, धनी आदमी, धर्म, अनाथ)

   (क) एक नगर में एक .... रहता था।

   (ख) उस समय वह आदमी अपने बरामदे में बैठा हुआ .... पढ़ रहा था।

   (ग) तो क्या तुम एक ....बालक हो ?

   (घ) मैं मनुष्य के गुणों को ही ....मानता हूँ।
2. बालक ने ऐसा क्यों कहा कि मेरा कोई धर्म नहीं है ?
3. बालक को उसके गुरुजी ने क्या सिखाया था ?
4. बालक और बाबा के बीच हुई मुख्य बातों को अपनी भाषा में लिखें।

5. धनी आदमी ने अन्त में क्या कहा?

भाषा की बात

- विलोम शब्द लिखें–

धर्म	–	अधर्म
सनाथ	–	....
विश्वास	–	....
सत्य	–	....
स्वस्थ	–	....

- अंतर बताओ

उठना	–	उठाना	चढ़ना	–	चढ़ाना
करना	–	करवाना	चलना	–	चलाना

यह भी करें–

- किसके द्वारा क्या कहा गया

बालक द्वारा	बाबा द्वारा
1.	1.
2.	2.
3.	3.

- उक्त पाठ के संवाद को अपने विद्यालय में आयोजित बालसभा, उत्सव आदि अवसर पर शिक्षक की सहायता से मंचन करें।
- आप पाठ के संवाद को मौखिक याद कर अपनी कक्षा में सुनाएँ।

> पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि इनमें वह शक्ति है जो अंतःकरण को उज्ज्वल करती है।
>
> – **महात्मा गांधी**

पढ़ने के लिए

कबड्डी

जंगल में हो गए इकट्ठे थोड़े–से खरगोश,
लगे खेलने सभी कबड्डी, भर कर मन में जोश।
बढ़िया सा मैदान बनाया, रहें न कंकर–शूल,
महक रही थी उसमें केवल रेशम–जैसी धूल।

दिखा रहे थे सब आपस में अपने–अपने दाँव,
फुर्ती जो थी, कहीं किसी के नहीं उखड़ते पाँव।
कभी–कभी तो जोर–शोर से छिड़ जाता संघर्ष,
फिर पल भर में छा जाता सब के मुख पर हर्ष।

कोई पकड़ छोड़ देता है, कोई लेता घेर,
कोई गिरता ,कोई उठता, बिना लगाए देर।
हार–जीत का निर्णय करना, वहाँ न था आसान,
ऐसे ही खेलों से बढ़ती खेल–जगत की शान।

7 कलाकार का असंतोष

एक गाँव में एक आदमी रहता था। वह मिट्‌टी की मूर्तियाँ बनाया करता था। उसकी बनाई मूर्तियाँ सुंदर होती थीं, इसलिए वे बाजार में आसानी से बिक जाती थीं। अच्छे दिन थे। उसका गुजारा मज़े में हो जाता था।

जब उसका लड़का बड़ा होने लगा तो बाप ने बेटे के हाथ में हुनर देखकर उसे भी मूर्ति बनाने का काम सिखा दिया। अब बाप और बेटा दोनों मूर्तियाँ बनाने लगे। बेटे का हाथ बाप से ज्यादा साफ था। वैसे भी नवयुवक होने के कारण वह अधिक चुस्त और फुर्तीला था। उसकी मूर्तियाँ बाप से अच्छी बनने लगी। शुरू में तो उसकी बनाई मूर्तियाँ उसी दाम में बिकती थी, जिस दाम में बाप की लेकिन बाप की झिड़कियाँ खाने के बाद और अधिक ध्यान से काम करने के कारण, उसकी बनाई हुई मूर्तियाँ बाप की बनाई हुई मूर्तियों से अधिक दाम पर बिकने लगीं। बाप की मूर्ति बिकती सात रुपये में, बेटे की बिकती दस रुपये में।

लेकिन इस पर भी बाप की डाँट–डपट और झिड़कियाँ कम नहीं हुई। वह बेटे की बनाई हुई मूर्तियों में दोष निकालता रहता।

बेटे ने मूर्ति बनाने की ओर अधिक ध्यान दिया। वह बहुत मेहनत से मूर्तियाँ बनाने लगा।

अब बेटे की मूर्तियाँ अधिक तराशी हुई होने लगीं। बाजार में उनका दाम भी बढ़ गया। बाप की बनाई मूर्तियाँ सात रुपये में ही बिकती रहीं जबकि बेटे की बनाई मूर्तियों की कीमत बढ़कर बारह, पंद्रह और फिर बीस तक पहुँच गई।

मगर बाप को संतोष नहीं हुआ। वह बेटे की बनाई मूर्ति में दोष निकालता – ये आँख दूसरी आँख से अधिक बड़ी बन गई है।..... कंधों की गोलाई बराबर नहीं..... ये कान बनाए हैं या अनाज साफ करने के छाज ?.... ..... नाखून बहुत छोटे हैं दिखते तक नहीं......... और ये नाभि बनाई है या अपने गाँव का कुआँ ?'' एक दिन बेटे ने झल्लाकर कहा, ''बापू तुम मेरी मूर्तियों में दोष क्यों निकालते हो ? तुम्हारी खुद की मूर्तियाँ तो दोषों से भरी हुई होती हैं। मैं तुम्हारी हर मूर्ति में बीस दोष निकाल सकता हूँ। अब देख लो– तुम्हारी बनाई मूर्ति अभी तक सात रुपये में ही बिकती है और मेरी

मूर्ति के लिए लोग बीस रुपये तक खुशी से दे जाते हैं। मेरे खयाल से मेरी मूर्ति में कोई दोष नहीं होता। वे इतनी सजी–संवरी होती हैं कि अब उनमें सुधार की कोई गुंजाइश नहीं है।''

बाप उदास हो गया। दुःखी स्वर में वह बोला, ''बेटे, मुझे यह बात मालूम है लेकिन तेरे मुँह से यह बात सुनकर मुझे लगने लगा है कि अब तुझे तेरी मूर्तियों के लिए बीस रुपये से अधिक कभी नहीं मिलेंगे।''

''क्यों ?'' बेटे के स्वर में आश्चर्य था।

बेटे की ओर देखता हुआ बाप बोला, ''क्योंकि जब मूर्तियों को बनाने वाले कलाकार को खुद ये लगने लगे कि उसके काम में निखार आ गया है और उसमें सुधार की कोई गुंजाइश नहीं रही है तो मान लेना कि उसका विकास रुक गया है। कलाकार का संतोष उसकी प्रगति को वहीं रोक देता है। एक दिन मुझे भी अपने काम से संतोष हो गया था और आज तक मुझे मूर्तियों की कीमत कभी सात रुपये से अधिक नहीं मिली है।''

बेटा लज्जित हो गया और उसका सिर नीचे झुक गया।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

गुजारा	–	जीवन यापन, जिंदगी का चलना
हुनर	–	योग्यता, कौशल, प्रतिभा
दाम	–	कीमत
झिड़की	–	हल्की डाँट
तराशी	–	निखरी, अच्छे ढंग से उकेरी गई
संतोष	–	तसल्ली, तृप्ति, संतुष्टि
छाज	–	सूप, छाजळा
झल्लाकर	–	खीझकर, चिढ़ना
लज्जित	–	शर्माना

उच्चारण के लिए

मूर्तियाँ, हुनर, शुरू, झल्लाकर, पंद्रह, संतोष

सोचें और बताएँ

1. बेटे की मूर्तियाँ आसानी से क्यों बिक जाती थी ?
2. बाप उदास क्यों हो गया ?
3. कलाकार के संतोषी होने पर उसकी कला पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(दोष, गुजारा, लज्जित, मेहनत, आश्चर्य)

(क) उसका ....मजे में हो जाता था

(ख) वह बेटे की बनाई हुई मूर्तियों में ....निकालता रहता था।

(ग) वह बहुत .... से मूर्तियाँ बनाने लगा।

(घ) बेटा ....हो गया और उसका सिर नीचे झुक गया ।

(ङ) बेटे के स्वर में.. था ।

2. कलाकार के दिन कैसे बीत रहे थे और क्यों ?
3. कलाकार अपने बेटे की बनी मूर्तियों में दोष क्यों निकालता रहता था ?
4. बेटे की मूर्तियाँ बाप की मूर्तियों से अच्छी क्यों बनने लगी ?
5. बेटे की बात सुनकर पिता को कैसा लगा ? पिता ने उसे क्या समझाया?

भाषा की बात

- एक वचन शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए।

मूर्ति	–	मूर्तियाँ
खिड़की	–	....
झिड़की	–	....
कली	–	....
गली	–	....
डाली	–	....

यह भी करें–

- विभिन्न मूर्तियों के बारें में जानकारी प्राप्त कर चर्चा करें।
- आप भी मिट्टी या कागज की लुगदी से विभिन्न प्रकार की मूर्तियाँ बनाकर अपनी कक्षा में प्रदर्शित करें।
- ''बाद में बेटा लज्जित हुआ और उसका सिर क्यों झुक गया।'' बताइए ऐसा क्यों हुआ इस पर कक्षा में चर्चा करें।

मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, अपितु परिस्थितियाँ मनुष्य की दासी है।
–डिजराइली

8 गीत यहाँ खुशहाली के

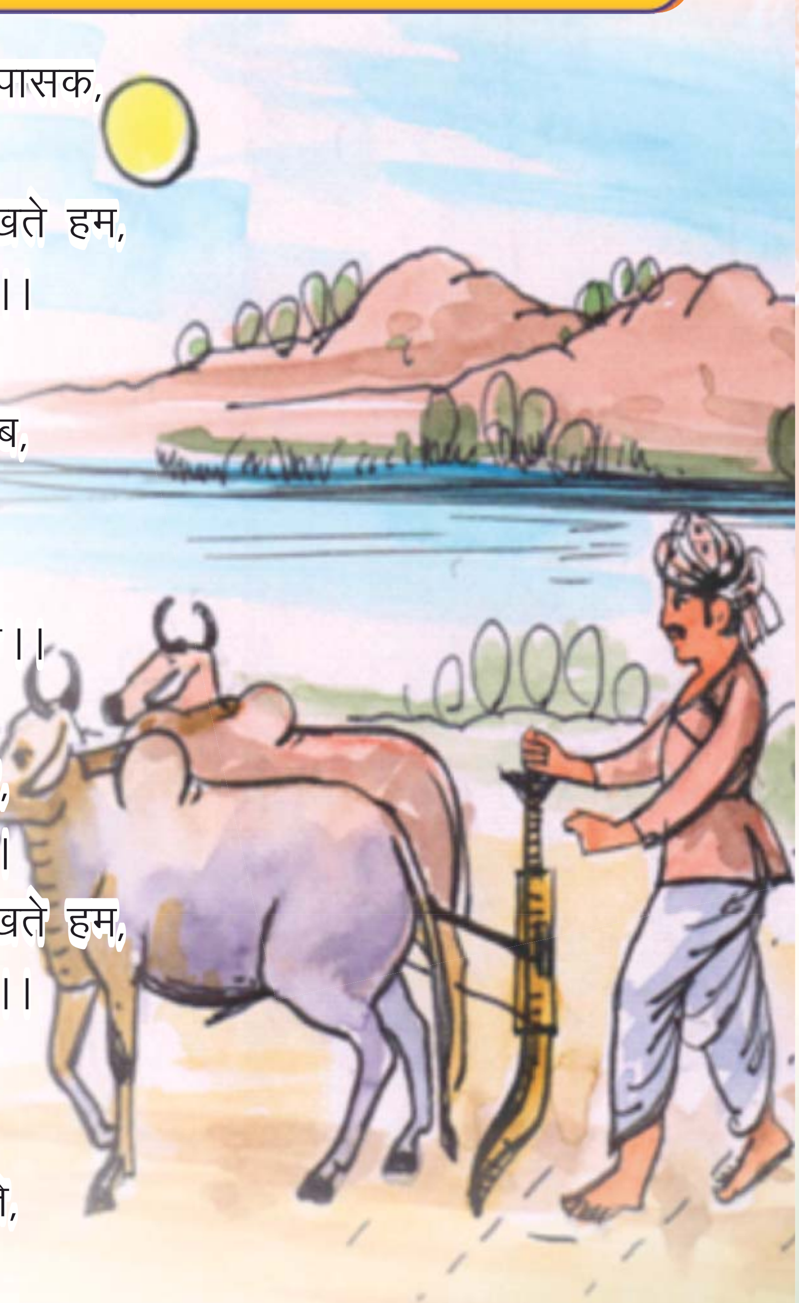

युग–युग से हम रहे उपासक,
गैंती और कुदाली के।
हल की नोक लिए लिखते हम,
गीत यहाँ खुशहाली के।।

घुँघरू वाले बैलों के जब,
मिट्टी महके पाँव तले,
बहे पसीना तेज धूप में,
या बादल की छाँव तले।।

दर्शन होते इन्द्रधनुष के,
या संध्या की लाली के।
हल की नोक लिए लिखते हम,
गीत यहाँ खुशहाली के।।

कोयल, मोर, पपीहे गाते,
श्याम घटा घहराती है।
मधुर स्वरों में कोकिल–कंठी,
बहुएँ गीत सुनाती हैं।।

वन–बागों में झूले बँधते,
जब पेड़ों की डाली से।
हल की नोक लिए लिखते हम,
गीत यहाँ खुशहाली के।।

पर्वत पर से नदी उछलती,
मैदानों में आती है।
हरियाली की चूनर धानी,
खेतों में लहराती है।।

मोती जैसे दाने हँसते,
हर गेहूँ की बाली के।
हल की नोक लिए लिखते हम,
गीत यहाँ खुशहाली के।।

उत्पादन की अलख जगाती,
फसलें सभी जवानों में।
चौपालों पर झाँझ–मंजीरे,
बजते नए तरानों में।।

गली–गली में उत्सव मनते,
होली और दीवाली के।
हल की नोंक लिए लिखते हम,
गीत यहाँ खुशहाली के।।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

उपासक	–	उपासना या भक्ति करने वाला
घहराना	–	घुमड़–घुमड़कर आना
चौपाल	–	बैठक
खुशहाली	–	सुख–समृद्धि का समय
अलख जगाना	–	जोश पैदा करना
तराना	–	गीत की लय
घटा	–	बादल
कोकिल–कंठी	–	कोयल जैसे मधुर कंठ वाली

उच्चारण के लिए

कुदाली, गैंती, मिट्टी, छाँव, संध्या, कंठी, बहुएँ, हँसते, गेहूँ, मैदानों, चौपालों, जगाती, तरानों

सोचें और बताएँ

1. युग–युग से हम किसके उपासक रहे हैं ?
2. आसमान में किस–किसके दर्शन होते हैं ?
3. हम कौन–कौनसे उत्सव मनाते हैं ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें
   (इंद्रधनुष, महके, दाने, नदी)
   (क) मिट्टी .... पाँव तले।
   (ख) दर्शन होते .... के।
   (ग) पर्वत पर से .... उछलती।
   (घ) मोती जैसे .... हँसते।
2. इंद्रधनुष के दर्शन कब होते हैं ?
3. किसान का पसीना कब बहता है ?
4. कालीघटा छाने पर कौन–कौन गीत गाने लगते हैं ?
5. नदी कहाँ से बहकर आती है और उसका मैदानों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
6. गली–गली में उत्सव कब मनाते हैं ?

भाषा की बात

- निम्नलिखित बहुवचन रूपों को एकवचन में लिखें

चौपालों	–	चौपाल
पेड़ों	–	....
बैलों	–	....
गीतों	–	....
स्वरों	–	....
मैदानों	–	....

यह भी करें–

- आपके घर व आस–पड़ोस में गाए जाने वाले गीतों की सूची बनाएँ व कक्षा में सुनाएँ।

यह भी जाने

- प्रकृति का संबंध जीवन से होता है। पर्यावरण संरक्षण हेतु पेड़–पौधों की हम रक्षा करेंगे। धरती हरी–भरी रहेगी। भरपूर वर्षा होगी। हमारा जीवन खुशहाल होगा। हमारे जीवन को सुखी बनाने वाली स्थितियों की चर्चा करें और उसके बारे में अनुभवी लोगों से जानें।

मुस्कान पाने वाला मालामाल हो जाता है, पर देने वाला दरिद्र नहीं होता। –अज्ञात

9 मैं सड़क हूँ

जी हाँ ! मैं सड़क हूँ। मिट्टी, पत्थर और डामर से बनी। एक बड़े अजगर की तरह मैदानों, जंगलों और पहाड़ों के बीच से गुजरती हूँ। पेड़ों की छाया के नीचे से होकर मैदानों को पार करती हुई, गाँवों को शहरों से जोड़ती हूँ। जब आदमी ने एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की बात सोची होगी। मैं कहीं कच्ची हूँ तो कहीं पक्की। कहीं मैं घुमावदार बनी तो कहीं एकदम सीधी–सपाट। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, महल झोंपड़ी, बाग–बगीचे, हाट–बाजार और भी न जाने कहाँ–कहाँ मेरी पहुँच है।

लोग कहते हैं कि गाँव के पास होकर गुजरते समय मैं उसके विकास का हिस्सा बन जाती हूँ। सच पूछो तो मुझे विभिन्न ऋतुओं में तरह – तरह की फसलों से हरे–भरे खेत बहुत सुंदर लगते हैं। गाय, भैंस, बैलों के झुंड जब मेरे ऊपर से गुजरते हैं तो मैं अपना दुख–दर्द भूल जाती हूँ। मेरे बाजू में खड़े हरे–भरे पेड़ों की छाया मुझे बहुत अच्छी लगती है।

गर्मी के दिनों में पैदल चलने वालों को भी इनकी छाया में आराम मिलता है। मेरे किनारे पर लगे आम, जामुन जैसे फलदार पेड़ लोगों को आनंद देते हैं। बच्चे तो उनकी ओर दौड़े चले जाते हैं। खेलते–कूदते, फलों को आपस में बाँटकर खाते हुए बच्चों को देखकर मुझे कितनी खुशी होती है, क्या बताऊँ।

दशहरा, ईद आदि त्योहारों और मेले से मेरी शोभा बढ़ जाती है। मेरे आस–पास सफ़ाई हो जाती है। दोनों किनारों पर रोशनी की जाती है। तरह–तरह की दुकानों से मैं सज जाती हूँ। काफी चहल–पहल होती है। सभी लोग खुश नज़र आते हैं। मुझे अच्छा लगता है, अपने नज़दीक यह रौनक देखकर।

दुख तब होता है जब मेरे ऊपर कूड़ा–करकट फेंक दिया जाता है। अरे! अरे! देखो कितने लोगों ने मुझ पर थूका भी है।

केला खाकर छिलका भी मुझ पर फेंक दिया है। कई जगह मुझ पर छोटे–छोटे गड्ढे बन जाते हैं, जिससे मुझे ही नहीं, लोगों को भी परेशानी होती है।

मैंने अपने ऊपर कभी लोगों के थके–हारे कदमों की आहट सुनी है, तो कभी तेज़ी से चलते हुए उत्साहित कदमों की धमक। हाँ कभी–कभी तो ऐसी दुर्घटना हो जाती है कि लोगों की मौत तक हो जाती है। तब मुझे दुख होता है, क्योंकि मैं उनकी कोई मदद नहीं कर पाती। यदि लोग मेरे किनारे लगे संकेत चिह्नों का पालन करें तो दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

चाहे जो भी मेरे ऊपर होकर गुज़रे, मैं सबके सुख–दुख में उनके

साथ शामिल हो लेती हूँ। मैं कोशिश करती हूँ कि सब लोगों को उनकी मंज़िल तक पहुँचा सकूँ। चलते रहो, चलते रहो–यही मैं कहना चाहती हूँ। सुख और दुख तो जीवन में आते–जाते रहते हैं, पर हमें उसकी परवाह न करते हुए चलते रहना चाहिए। सुनो–सुनो! अभी–अभी मेरे ऊपर होकर एक गाड़ी गुज़री है। क्या तुमने भी उसमें बजता हुआ गाना सुना है –

''रुक जाना नहीं, तू कहीं हार के ....!!!''

अभ्यास कार्य

शब्द –अर्थ

शोभा	–	सुंदरता
दुर्घटना	–	बुरी घटना
निर्दोष	–	जिसका कोई दोष न हो
इतिहास	–	पुरानी घटनाओं का विवरण
फलदार	–	फलों से युक्त
उत्साहित	–	जोश से भरा हुआ
घुमावदार	–	जिसमें बार–बार घुमाव आए
धमक	–	भारी आवाज

उच्चारण के लिए

महल, झोंपड़ी, हाट–बाजार, कूड़ा–करकट, मंजिल

सोचें और बताएँ

1. सड़क कैसी दिखाई देती है ?
2. सड़क पर केले के छिलके फेंकने से क्या हो सकता है ?
3. आपने सड़क के किनारे लगे कौन–कौनसे पेड़ देखे हैं ?
4. सड़क के किनारे रौनक कब–कब बढ़ जाती है ?

लिखें

1. कोष्ठक में सही गलत का निशान लगाएँ

सड़क पर हमेशा–

- बायीं ओर चलना चाहिए। ( )
- वाहन तेज गति से चलाना चाहिए। ( )

- कचरा फेंक देना चाहिए। ( )
- संकेतों को ध्यान में रखकर वाहन चलाना चाहिए। ( )
- सड़क पार करते समय पहले बायीं फिर दायीं ओर देखना चाहिए। ( )

2. यदि सड़क बोल सकती तो वह इनसे क्या कहती ?

- अपने ऊपर कूड़ा फेंकने वालो से।
- गर्मी में शीतल छाया देने वालो से।
- अपने ऊपर नाली का पानी छोड़ने वालो से
- अपने ऊपर बने गड्ढों को मिट्टी–गिट्टी से भरने वालों से।

3. सड़क का जन्म क्यों हुआ होगा ?
4. हम सड़क से होकर कहाँ–कहाँ जाते हैं ?
5. सड़क को कौन–कौनसी बातें बुरी लगती है और क्यों ?
6. सड़क के किनारों पर रोशनी कब की जाती है ?

सुनें और लिखें। (श्रुतलेख)

शिक्षक/शिक्षिका श्रुतलेख लिखाने का तरीका बताएँ। एक अनुच्छेद का श्रुतलेख लिखवाएँ। गद्यांश को पूरा पढ़कर सुनाएँ, जिससे बच्चे संदर्भ से परिचित हो जाएँ। तब लिखने के लिए वाक्यांशों को तीन– तीन बार बोलें। गद्यांश पूरा होने पर एक बार पुनः पढ़ें, ताकि कोई संशोधन करना हो, तो किया जा सके।.

(इसके बाद एक छात्र/छात्रा पाठ के एक अनुच्छेद को बताए अनुसार बोलें। शेष छात्र/छात्रा उसे लिखें। बाद में अभ्यास पुस्तिकाएँ जँचवा लें।

भाषा की बात

- मेरे आस–पास सफाई हो जाती है।
- दोनों किनारों पर रोशनी की जाती है।

ऊपर दो बातें कही गई हैं। हर बात के पूरी होने पर एक चिह्न। लगाया गया है '।' इसे 'पूर्ण विराम' कहते हैं।

- निम्न वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम लगाएँ।

(क) मैं सड़क हूँ मिट्टी और पत्थर से बनी हूँ

(ख) उत्सवों के समय मैं तरह–तरह की दुकानों से सज जाती हूँ मुझ पर काफी चहल–पहल होती है

- काली सड़के, बड़े गड्ढे, इनमें 'काली' और 'बड़े' शब्द सड़क और गड्ढे की विशेषता बता रहे हैं। विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। विशेषण लगाकर तुम भी नये शब्द लिखो–

मीठा गुड़	सुंदर गुड़िया
....	....
....	....
....	....

यह भी करें–

नीचे कुछ विषय लिखे हैं। इनमें से अपने मनपसंद विषय पर कुछ वाक्य बोलो और लिखो।

- मैं नदी हूँ।
- मैं किताब हूँ।
- मैं आम हूँ।
- मैं बगीचा हूँ।

जैसे – मैं आम हूँ। मुझे फलों का राजा कहते हैं।

इस दृश्य को ध्यान से देखें और इस पर आधारित वाक्य लिखें।

....

....

....

....

इन्हें भी जानो ।

संकेत

हॉर्न न बजाएँ

खड़ी चढ़ाई है।

बायीं ओर विकट मोड़ है,
धीरे चलें।

दायीं ओर विकट मोड़ है।
धीरे चलें।

आगे स्कूल है। धीरे चलें।

गति सीमा 50 कि.मी. प्रतिघंटा रखें।

वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करें।

केवल पढ़ने के लिए

कंजूस सेठ

एक था सेठ। एक दिन उसको नारियल की जरूरत पड़ गई। वह नारियल लेने बाजार पहुँचा। उसने दुकानदार से पूछा– "एक नारियल कितने का है।" दुकानदार बोला –"एक रुपये का।" सेठ बोला – "एक रुपये में दो, दे दो ना।" दुकानदार बोला –"आगे मिलेंगे।"

सेठ आगे गया, वहाँ एक रुपये में दो नारियल मिल रहे थे। सेठ बोला – "एक रुपये में चार दे दो न।"

दूसरा दुकानदार बोला –"आगे मिलेंगे।"

सेठ आगे गया, वहाँ एक रुपये में चार नारियल मिल रहे थे।

सेठ बोला – "एक रुपये में आठ दे दो न।"

तीसरा दुकानदार बोला –"आगे नारियल का पेड़ है ,वहीं से तोड़ लाओ। कुछ भी नहीं देना पड़ेगा।"

सेठ पेड़ के पास पहुँचा। उसने पेड़ से कभी नारियल नहीं तोड़े थे। सेठ पेड़ पर चढ़ गया। खूब नारियल तोड़ लिए, लेकिन जब उतरने की सोची तो डर लगने लगा। इतने ऊँचे पेड़ से कैसे उतरूँ। बस; सेठ पेड़ पर लटके–लटके ही चिल्लाने लगा–"मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। बचाने वाले को दो हजार रुपये दूँगा।"

सेठ कब तक लटका रहा होगा, वह कैसे उतरा होगा ? कहानी आगे बढ़ाओ और अपने साथियों को सुनाओ।

10 काठ की पुतली : नाचे, गाएँ

पात्र परिचय :–

पुतली वाला – कठपुतली का खेल दिखाने वाला जो पुतलियों को धागे से नचाता व संवाद बोलता है।

सलीम – एक बच्चा।

राधे – दूसरा बच्चा।

(कठपुतली वाला खेल दिखा रहा है।)

सलीम – यह सीटी कैसी बजी ? चीं –चीं, चूँ–चूँ। यह कौन बजा रहा है ?

राधे – यह तो कठपुतली वाला बजा रहा है। पर्दे के पीछे उसका साथी ढोलक बजा रहा है। लो, देखो सलीम! खेल शुरू हो गया है।

सलीम – पुतली झाड़ू लगा रही है और सीटी भी बज रही है।

वाह! अरे! वाह!! वह तो गई। उड़ कैसे गई ?

राधे – पुतली वाला उसे डोरे से खींचकर ऊपर ले गया। अंगुलियों में डोरे बाँधकर पुतली नचा रहा है और मुँह से सीटी बजा कर तरह–तरह की धुन निकाल रहा है। कमाल का काम है भाई।

सलीम – अब कौन आया ? भिश्ती! सुनो, वह क्या कह रहा है ?''भिश्ती फ़ैज़ाबाद का, पानी है गुलाब का।'' वह पानी का छिड़काव कर रहा है। वह भी चला गया।

राधे – अब क्या होगा ? अच्छा, दरबार लगेगा! देखो, कुर्सियाँ उतर रही हैं। राजा–महाराजा आकर बैठ रहे हैं। कोई घोड़े पर, कोई हाथी पर, कोई ऊँट पर। डुगडुगी वाला डुगडुगी बजा रहा है। बोल भी रहा है –

(पर्दे के पीछे से कठपुतली वाले की आवाज)

और बजेगी और बजेगी, जरा–सी और बजेगी। ''मेहरबान! अब मिट्ठन पट्टेबाज आपके सामने आ रहा है।''

राधे – यह कौन बोला ? पहरेदार ? अच्छा वह लम्बा चोगेवाला! और यह आ गया पट्टेबाज़ पहलवान! कमाल है! कैसे–कैसे हाथ चला रहा है, पट्टा कैसे घुमा रहा है। राजा लोग तालियाँ बजा रहे हैं और सीटी कैसे बज रही है ? चँई–चूँ–चँई गए पहलवान जी।

सलीम – यह कौन आ गई ? एकदम परी जैसी ? झुककर नमस्कार करती है और नाचती है। बहुत खूब, भाई बहुत खूब। पुतली वाला तो कमाल का आदमी है।

राधे – अब यह कौन आ गई ? माथे पर टोकरी, हाथ मटकाती, वह तो आकर बैठ गई है। सुनो–सुनो, वह गाना गा रही है।

(पर्दे के पीछे से गाने की आवाज़)

''तरकारी ले लो, ले के आई मैं बीकानेर से।
आलक बेचूँ, पालक बेचूँ और बेचूँ चंदलोई,
भाव–ताव में फर्क नहीं है, बच्चा ले या कोई।
तरकारी ले लो, ले के आई मैं बीकानेर से।''

लो वह चली गई,
अपना गाना गाकर और नाच दिखाकर।

सलीम – अब ये राजा क्या कर रहे हैं ? सब बोल रहे हैं। सुनो–सुनो, ऐसा लगता है, उनमें झगड़ा हो रहा है।

(पर्दे के पीछे से झगड़ने की आवाज़)

''पहले मैं जाऊँगा, मैं बड़ा हूँ।''

''नहीं, पहले मैं जाऊँगा, मैं बड़ा हूँ।''

''तुम बड़े नहीं, मैं हूँ।''

''मैं हूँ, मैं हूँ'' कहते हुए वे तो लड़ने लग गए।

अरे, अरे ! तलवारें चल रही है। लड़ाई हो रही है। वह एक गिरा। वह दूसरा गिरा। एक–एक करके सब गिर पड़े, लड़ मरे! अब क्या होगा ?

(पर्दे के पीछे से गाने की आवाज़)
लड़ो मती भाई, लड़ो मती,
आपस में लड़कर मरो मती।
साथ रहो, भाई साथ रहो,
मिल–जुलकर सब साथ रहो।

राधे – देखो ना! सब लड़कर मर गए।
चीं–चीं–चीं, चूँ–चूँ–चूँ भाई लोगों, आज का खेल खत्म हुआ। (पुतली वाला सामने आकर सभी को सलाम करता है और कहता है) डालो, थाली में पैसे डालो।
(सभी तालियाँ बजाते हैं।)

सलीम – मजा आ गया। पुतलियाँ कैसे–कैसे खेल दिखाती हैं।

राधे – कमाल तो कठपुतली का है। धागो से अंगुलियों के सहारे कठपुतलियों को कैसे नचाता है।
देखो– वह पैसे बटोर रहा है।
अपना सामान समेट रहा है।

सलीम – राधे! चलो, बहुत मजा आया। अब घर चलते हैं।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

कठपुतलियाँ	–	लकड़ी और कपड़े से बनाए गए पुतले
भिश्ती	–	मशक से पानी छिड़कने वाला
कमाली	–	अनोखा काम करने वाला
पट्टेबाज़	–	पट्टा चलाने वाला
पहरेदार	–	पहरा देने वाला

तरकारी – सब्जी
तमाशा – खेल

उच्चारण के लिए

पट्टेबाज, मिट्ठन, फैजाबाद, कठपुतलियाँ, अंगुलियों

सोचें और बताएँ

1. खेल दिखाने वाला पुतलियों को किससे नचाता था ?
2. राजा लोग क्या कर रहे थे ?
3. माथे पर टोकरी लेकर कौन आई ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें
   (अ) पुतली ने सबसे पहले कौनसा काम किया था ?
   (क) छिड़काव लगाया (ख) झाड़ू लगाया
   (ग) कुर्सियाँ उतारी (घ) उड़ गई ( )
   (ब) "मिल – जुलकर सब रहो।" ये शब्द किसने कहे।
   (क) डुगडुगी वाले ने (ख) राजा ने
   (ग) पुतली वाले ने (घ) सिपाही ने ( )
2. सही / गलत पर निशान लगाएँ
   (अ) कठपुतली वाला पुतली को डोरे से खींचता है। (सही / गलत)
   (ब) मिट्ठन पट्टेबाज़ छोटे चोगे वाला है। (सही / गलत)
   (स) खेल के बाद पुतली वाले ने पैसे इकट्ठे नहीं किए। (सही / गलत)
   (द) बाहर कोने में पहरेदार बैठा है। (सही / गलत)
3. कठपुतलियों को कौन नचाता है ?
4. कठपुतली ने कौन–कौनसे खेल दिखाए ?

5. कठपुतली वाले ने कौनसा गीत सुनाया ?

6. मंच पर कौन–कौनसी कठपुतलियाँ आई ?

भाषा की बात

शब्द बनाओ

- पाठ में पट्टेबाज़ शब्द आया है। यह 'पट्टे' और 'बाज़' से मिलकर बना है। तुम भी 'बाज' जोड़कर नये शब्द बनाएँ

दगा + बाज =......................	कला + बाज =.......................
चाल + बाज =.....................	तलवार + बाज =....................

- पहरेदार शब्द पहरे में दार जुड़कर बना है। आप भी दिए गए शब्दों के साथ 'दार' जोड़कर नए शब्द बनाएँ

ईमान + दार =.......................	दुकान + दार =.......................
खुशबू + दार =.......................	चौकी + दार =.......................
बदबू + दार =.........................	समझ + दार =.......................

- निम्नलिखित पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बनाएँ

घोड़ा	–	घोड़ी	मोर	–	मोरनी
लड़का	–	....	शेर	–	....
बेटा	–	....	ऊँट	–	....

- नीचे लिखी क्रियाओं से एक–एक वाक्य बनाएँ

  सोना –मैं खाट पर सोता हूँ।

(क) पढ़ना – ....

(ख) लिखना – ....

(ग) खाना – ....

(घ) लाना – ....

(ङ) पीना – ....

(च) देना – ....

यह भी करें–

- नाच दिखाते समय यदि पुतली के डोरे टूट जाएँ, तो क्या होगा ? बताएँ।
- कठपुतली वाले द्‌वारा दिखाए खेलों में से तुमको कौनसा खेल सबसे अच्छा लगा ? और क्यों ?

  तुम्हारे आस – पास कठपुतली का खेल हो तो देखो।
- शिक्षक की सहायता से निम्नलिखित बिंदुओं पर अभिनय करें

सब्जी बेचने वाला	–	सब्ज़ी खरीदने वाला
अध्यापिका	–	छात्रा
माँ	–	बेटा
डॉक्टर	–	मरीज

- शिक्षक /शिक्षिका किताब की किसी मनपसंद कहानी का बच्चों से अभिनय कराएँ।

जानकारी बढ़ाएँ

भारत में कठपुतली के अलावा दस्ताना पुतली, छड़ पुतली, छाया पुतली, अंगुली पुतली, जल पुतली, कागज पुतली आदि भी प्रचलन में है।

- **भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर।**

उदयपुर के पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र में पुतली संग्रहालय है। उदयपुर में ही भारतीय लोककला मण्डल में कठपुतली का नृत्य दिखाया जाता है। हमारे राज्य में कई संग्रहालय व स्थान हैं, जहाँ कठपुतली का खेल नियमित रूप से दिखाया जाता है।

> लगन और योग्यता एक साथ मिलें तो निश्चय ही एक अद्वितीय रचना का जन्म होता है — मुक्ता

11 अपना देश

पर्वत और मैदानों वाला,
खेतों और खलिहानों वाला,
बाग–बगीचों जंगल वाला,
मरुथल में भी मंगल वाला ,
सभी सुखों की खान है।
अपना देश महान है।

मंदिर–मस्जिद गिरजों वाला,
गढ़–कोटों–कंगूरों वाला
सीधे–सादे गाँवों वाला,
लम्बे–चौड़े शहरों वाला,
यह हम सबकी शान है।
अपना देश महान है।

अलग–अलग पहनावों वाला,
रंग–ढंग विश्वासों वाला,
अलग बोलियों–भाषा वाला,
रीति, रस्म, रिवाजों वाला,
सबकी आन समान है।
अपना देश महान है।

हिल–मिल आगे बढ़ने वाला,
अपनी मंजिल गढ़ने वाला,
श्रम–साहस–बलिदान प्रेम के,
पाठ हमेशा पढ़ने वाला,
यह इसकी पहचान है।
अपना देश महान है।

निर्देश :–देश के प्रति प्रेम, भाईचारा, सभी धर्मों का आदर करने जैसे अन्य जीवन मूल्य समझाएँ।

अभ्यास कार्य

शब्द – अर्थ

पर्वत	–	पहाड़
कंगूरे	–	गुंबद
बलिदान	–	अपना त्याग
मरुथल	–	मरुस्थल, रेगिस्तान
गढ़ने	–	बनाने
महान	–	बड़ा
सर्व	–	सब

उच्चारण के लिए

मैदानों, मंदिर, मस्जिद, गिरजे, रीति, प्रेम

सोचें और बताएँ

1. हमारे देश को किसकी खान बताया गया है ?
2. सब लोगों की आन कैसी बताई गई है ?

3. हमारा देश मरुस्थल में भी कैसा लगता है ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–
   (क) बाग–बगीचों .... वाला।
   (ख) सीधे–सादे .... वाला।
   (ग) हिल–मिल आगे .... वाला।
   (घ) पाठ............... पढ़ने वाला।
2. सही क्रम से पुनः लिखो–
   (क) गढ़–कोटों कंगूरों वाला, ...
   (ख) मंदिर–मस्जिद–गिरजों वाला ....
   (ग) लम्बे–चौड़े शहरों वाला, ...
   (घ) सीधे–सादे गाँवों वाला ....
3. हमारे देश को सभी सुखों की खान क्यों बताया गया है ?
4. हमारे देश की धरती कैसी है ?
5. भारत की पहचान किसे बताया गया है ?
6. हमारे देश की क्या–क्या विशेषताएँ हैं ?
7. भारत देश को महान क्यों कहा गया है ?

भाषा की बात

बोलें और लिखें

जंगल..	चाँद ....
मंगल	गाँव ....
मंजिल	पाँव ....
मंदिर	छाँव ....

नीचे लिखे पर्याय शब्द समूह का उचित शब्द से मिलान करें।

शब्द समूह	शब्द
पर्वत, पहाड़	हवा
वायु, पवन	पानी
जल, नीर	धरती
पृथ्वी, भूमि	कमल
पंकज, नीरज	पेड़
विटप, वृक्ष	गिरि

यह भी करें –

देश–प्रेम की अन्य कविताएँ याद करें और सुनाएँ।

जो शारीरिक श्रम नहीं करता है उसे खाने का हक कैसे हो सकता है ?

– महात्मा गाँधी

12 साहसी बालिका

आज पंद्रह अगस्त है। स्कूल में उत्सव मनाया जा रहा है। खूब भीड़–भाड़ है। कोई आजादी की कविता सुना रहा है, कोई आजादी का गीत। अध्यापक जी ने भी एक कहानी सुनाई।

बच्चों, एक छोटी लड़की थी। उसका नाम मैना था। उम्र थी सात साल। उसके पिता का नाम नाना फड़नवीस था। नाना साहब देश की आजादी चाहते थे। मैना भी आजादी चाहती थी। अंग्रेज इस बात पर उसके पिताजी से नाराज थे। उन्होंने नाना साहब के महल में आग लगवा दी। नाना साहब जलते हुए महल में से निकल गए। मैना भी किसी तरह जलते हुए महल से बाहर आ गई।

बाहर आते ही उसे अंग्रेज सैनिकों ने पकड़ लिया। वे उसे जनरल के पास ले गए।

जनरल ने मैना से पूछा – लड़की तुम्हारा क्या नाम है ?

मैना

किसकी लड़की हो तुम ?

नाना साहब की ।

अच्छा, तो तुम हमारे दुश्मन की लड़की हो। तुम्हारे पिताजी देश की आजादी चाहते हैं, क्या तुम भी यही चाहती हो ?

क्यों नहीं चाहती ? अपने देश की आजादी किसे प्यारी नहीं होती ?

तो तुम भी अपने देश की आजादी के लिए लड़ोगी ?

जरूर लड़ूँगी। मैना निडर होकर बोली।

मैना का उत्तर सुनकर जनरल क्रोध से बोला—इस लड़की को आग में झोंक दो।

जनरल का आदेश सुनकर एक अफसर मैना से बोला—लड़की क्षमा माँग लो, कह दो कि तुम्हें आजादी नहीं चाहिए।

मैं क्षमा नहीं माँगूँगी। मुझे अपना देश प्यारा है। मुझे इसकी आजादी प्यारी है। मैं देश की आजादी के लिए लड़ूँगी। जरूर लड़ूँगी।

मैना के उत्तर से जनरल और भी चिढ़ गया। उसने आदेश दिया—अब देर मत करो फौरन इसे आग में झोंक दो।

बच्चों, सैनिकों ने मैना को पकड़कर आग में झोंक दिया। मैना ने हँसते—हँसते प्राण दे दिए लेकिन वह हम सभी को एक पाठ पढ़ा गई।

अभ्यास कार्य

शब्द अर्थ

उत्सव	–	जलसा, आनंद का कार्य
पंद्रह अगस्त	–	भारत के आजाद होने के दिन
आजादी	–	स्वतंत्रता
जनरल	–	सेना का अफसर
आदेश	–	आज्ञा
दुश्मन	–	शत्रु
निडर	–	जो डरे नहीं

उच्चारण के लिए

पंद्रह अगस्त, स्कूल, उत्सव, अंग्रेज, अध्यापक

सोचें और बताएँ

(1) साहसी बालिका का नाम क्या था ?

(2) बालिका के पिताजी का नाम क्या था ?

(3) साहसी बालिका को साहस की शिक्षा किससे मिली थी ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

(अ) विद्यालय में किसका उत्सव मनाया जा रहा था

(क) जन्माष्टमी (ख) शिक्षक दिवस

(ग) गणतंत्र दिवस (घ) स्वतंत्रता दिवस ( )

(ब) उत्सव में कहानी कौन सुना रहे थे

(क) मैना (ख) नाना फड़नवीस

(ग) जनरल (घ) अध्यापक ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें
   (आग, आजादी, झोंक, जनरल, फड़नवीस)
   (क) सैनिकों ने मैना को पकड़ कर................................ में ....दिया।
   (ख) मुझे अपनी ....प्यारी है।
   (ग) उसके पिता का नाम नाना ....था।
   (घ) उसे .... के पास ले गए।
3. स्कूल में उत्सव किस प्रकार से मनाया जा रहा था ?
4. अंग्रेज मैना के पिताजी से क्यों नाराज थे ?
5. जनरल मैना से क्यों चिढ़ गया ?
6. जनरल ने सैनिकों को क्या आदेश दिया ?
7. मैना हमें क्या पाठ पढ़ा गई ?
8. पाठ के आधार पर मैना के गुण बताइए ?
9. मैना के प्राण देते समय भी हँसी का क्या कारण था ?

भाषा की बात

- 'र' में 'उ' (ु) की मात्रा लगे चार शब्द बनाइए –
  र + उ = रु रुपया ....
- र में ऊ (ू) की मात्रा लगे चार शब्द बनाइए–
  र + ऊ = रू = रूप............... ....

यह भी करें –

- अपने आस–पड़ोस में उन महिला–पुरुषों की सूची तैयार करें जिन्होंने कोई विशेष, साहसिक कार्य किया हो।

नाम	किया गया साहसिक कार्य

- पाठ में से ऐसे शब्दों को छांटिए, जिनमें अनुस्वार (ं) अनुनासिक (ँ) का प्रयोग हुआ हो।

पंद्रह	लड़ूँगी
....	....
....	....
....	....

- यदि आप मैना की जगह होते तो ''आग में –झोंकने की बात'' सुनकर क्या करते ?
- इस कहानी जैसी ही और कौन–कौनसी कहानियाँ हैं, चर्चा करें।
- नाना फड़नवीस की तरह और किन–किन वीरों के नाम आप जानते हो नामों की सूची तैयार करें।

कुल की प्रतिष्ठा विनम्रता और सद्व्यवहार से होती है। – प्रेमचन्द

केवल पढ़ने के लिए

अपनाओ अच्छी आदतें

होते भोर टहलने जाओ
सेहत बिगड़ी भी बनाओ

दाँत न गंदे रहें तुम्हारे
मोती जैसे चमके न्यारे

बढ़े हुए नाखून काटना
हर मौसम में रोज नहाना

चबा–चबा कर खाना खाओ
तेज–तेज से मत चिल्लाओ

हरी सब्जियाँ हर दिन खाओ
उनसे खूब विटामिन पाओ ।

13 अजमेर की यात्रा

गुरमीत अजमेर घूमना चाहता था। उसने रज्ज़ाक को लिखा था कि वह उसी के घर ठहरेगा। उसका घर दरगाह बाज़ार में हैं। आज सवेरे जब गुरमीत रेलगाड़ी से उतरा, तो रज्ज़ाक उसे अपने डिब्बे के सामने ही मिल गया। उतरते ही उसने पहली बात यही कही, ''दोस्त, आज तो रेलगाड़ी में मेरा कचूमर ही निकल गया। कितनी भीड़ रहती है इस रेलगाड़ी में।''

''रमज़ान के महीने में अगर तुम यहाँ आना चाहो तो सोच–समझ कर ही आना। यों भी एकदम सींकिया पहलवान हो'', रज्ज़ाक ने हँसते हुए जवाब दिया।

''क्या उस समय और भी अधिक भीड़ हो जाती है ?''

''अरे, पूछो ही मत! उस समय अजमेर की आबादी में कम से कम एक लाख लोग और जुड़ जाते हैं। यात्रियों के लिए बहुत–सी व्यवस्थाएँ की जाती हैं। सड़कों पर, बाजारों में, जहाँ देखो वहाँ भीड़–ही–भीड़ हो जाती है।''

''तुम्हारे घर के पास तो मेला लगा रहता होगा ?''

''कुछ पूछो ही मत! उन दिनों तो बाज़ार जाकर सब्जी लाने में भी पहलवानी दिखानी पड़ती है।'' दोनों मित्र ज़ोर से हँस पड़े।

कुछ देर बाद गुरमीत को रज्ज़ाक अजमेर की सैर कराने ले गया।

''यह देखो, यह सदर दरवाज़ा कहलाता है और वह सामने बुलंद दरवाज़ा। उसके भीतर ही दरगाह है। हम लोग वहीं चल रहे हैं,'' रज्ज़ाक ने

बताया।

"और ये बड़े – बड़े कड़ाह ?" बुलंद दरवाज़े के दाएँ–बाएँ दिखाते हुए गुरमीत ने पूछा।

"इन्हें देग कहते हैं। इस बड़े देग में सौ मण से ज्यादा चावल का जरदा पक सकता है और छोटे में साठ मण। उर्स के समय वही प्रसाद बाँटा जाता है। उसे 'देग लूटना' कहते हैं। उस समय तो यहाँ कंधे से कंधा छिल जाता है। आओ आगे चलें।"

"यह बारहदरी और भीतर की मज़ार सब संगमरमर से जड़े हैं। देखो ना, कितना अच्छा लगता है यह सब।" गुरमीत ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

"हाँ, अत्यंत शांत और पवित्र। साथ ही गुलाब के फूलों की भीनी–भीनी महक भी फैल रही है।"

बाहर आकर गुरमीत ने पूछा, '' क्यों दोस्त, मज़ार पर वह चादर कैसी थी ?''

''यहाँ चादरें चढ़ाई जाती हैं। जब कोई मनौती मनाता है,

अब देखो, उस पहाड़ी पर तारागढ़ है। इसके ढलान में पृथ्वीराज का स्मारक है।

''कौन पृथ्वीराज ? जिन्होंने भारत पर आक्रमण करने वाले मोहम्मद गौरी को कई बार हराया था ?

''हाँ, वही, चौहानराज जो भारत के सम्राट रहे। रज्जाक अब आनासागर चलें। रास्ते में ही सोनीजी की नसियाँ है और सुभाष बाग भी देख लेंगे।''

''वह गुंबदों वाला मकान है ना! वह महर्षि दयानंदजी का आश्रम है।

यहीं पर उनकी समाधि है। जानते हो, दयानंद के नाम पर ही अजमेर के विश्वविद्यालय का नाम रखा गया है। समाधि के चारों ओर देखो, कितना सुंदर दृश्य है।''

''बहुत ही सुहावना! इस समय आना सागर में पानी भी काफी है। दूसरी पाल पर बच्चों के खेलने और झूलने के बहुत से साधन हैं और हाँ, तुम चलाना चाहो तो नाव की व्यवस्था भी है।''

''ना बाबा ना, मुझे नाव में डर लगता है। चलो थोड़ी देर बाग में बैठते हैं।''

आज तो थक गए। कल हम पुष्कर चलेंगे। गुरमीत ने प्रस्ताव रखा और फिर दोनों घर लौट पड़े लेकिन रास्ते में दाहिर सेन स्मारक देखना नहीं भूले।

सुबह पहली ही बस से पुष्कर निकले। अरावली की घाटियों में बस भागी जा रही थी। आधे घंटे में बस रुकी तो मंदिर दिखाई देने लगे।

लो आ गया पुष्कर। इधर देखो यह पुष्कर सरोवर। इसके चारों ओर

घाट ही घाट दिखाई दे रहे हैं। यहीं नहा लेते हैं। जानते हो न, यह तीर्थराज कहलाता है। यहाँ स्नान का अपना महत्त्व है।

लो अब पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर देखते हैं। यह दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इसके दायीं ओर पहाड़ी पर जो मंदिर दिखाई दे रहा है, वह गायत्री देवी का है और बायीं पहाड़ी पर सावित्री देवी का।''

यह मेला प्रांगण है। यहाँ कार्तिक मास में एकादशी से पूर्णिमा तक भारी मेला भरता है। खूब पशु खरीदे और बेचे जाते हैं। दुनियाभर से लोग आते हैं।

लो अब पंचकुंड चलते हैं। वहाँ पाँच कुण्ड हैं, जिनको पाँडवों ने बनाया था। उसके ऊपर ही गोमुख है। जिससे गिरने वाला पानी एक से दूसरे कुंड को भरता चलता है।

वाह, पानी फालतू नहीं जाता। कुण्डों को ही भरा हुआ रखता है।

खाना वहीं खायेंगे, मगर कोई बंदर झपट कर न ले जाए, 'ध्यान रखना, वहाँ खूब बंदर रहते हैं।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

मज़ार	–	पीर का कब्र
बारहदरी	–	बरामदा
रमजान	–	मुस्लिम कलेण्डर के एक माह का नाम
व्यवस्था	–	तैयारी / प्रबंध
सदर	–	मुख्य
मण	–	चालीस किलो
ज़रदा	–	चावल का व्यंजन
घाटी	–	पहाड़ों के बीच का रास्ता
गुंबद	–	शिखर,
देग	–	बड़ा बरतन

उच्चारण के लिए

व्यवस्थाएँ, कार्तिक, ब्रह्मा, प्रसिद्ध, गुंबद, तीर्थराज

सोचें और बताएँ

1. गुरमीत और रज्जाक कहाँ घूमने गए ?
2. अजमेर विश्वविद्यालय का नाम किसके नाम पर रखा गया है ?
3. पुष्कर में किसका मंदिर है ?
4. तीर्थराज किसे कहा गया है ?

लिखें

1. नीचे लिखे वाक्यों के आगे सही या गलत का निशान लगाएँ।

- रमज़ान के महीने में कम से कम एक लाख यात्री अजमेर आते हैं। ( )
- रज्ज़ाक मदार में रहता है। ( )
- गुरमीत रेल से अजमेर गया। ( )
- अजमेर की यात्रा गुरमीत ने अकेले की। ( )
- उर्स के समय देग में बने चावल बाँटने को 'देग लूटना' कहते हैं। ( )

2. रमज़ान के महीने में अजमेर सोच–समझकर आने की बात रज्ज़ाक ने क्यों कही ?
3. रमज़ान के दिनों में रज्ज़ाक के मोहल्ले का प्रत्येक घर सुगंध से क्यों भर उठता है?
4. यदि तुम अजमेर व पुष्कर जाओ तो वहाँ क्या–क्या देखना पसंद करोगे ?
5. पुष्कर में पहाड़ी पर किसका मंदिर है ?
6. पंचकुण्ड़ों की क्या विशेषताएँ है ?
7. नीचे लिखे वाक्य किसने किससे कहे –

वाक्य	किसने कहा	किससे कहा
कितनी भीड़ रहती है, इस गाड़ी में!		
जो भी अजमेर आता है, इसे ज़रूर देखता है।		
बहुत सुंदर! इस तालाब में पानी भी काफ़ी है।		

8. "जहाँ देखो वहीं भीड़ ही भीड़ हो जाती है।" इस वाक्य में अधिकता बताने के लिए भीड़ ही भीड़ कहा गया है। इसी प्रकार अधिकता बताने के लिए ही शब्द जोड़कर वाक्य की पूर्ति करें।

(क) बाग में फूल ....थे।

(ख) मेले में दुकानें ....थीं।

(ग) हलवाई की दुकान पर मिठाइयाँ .... थीं।

- इस तरह के और भी वाक्य लिखो।

(घ) ....

(ङ) ....

भाषा की बात

- नीचे लिखे वाक्य को ध्यान से पढ़ो।

<u>सड़कों</u> और <u>बाजारों</u> में, जहाँ देखो भीड़ ही भीड़ हो जाती है। रेखांकित शब्द एक से अधिक सड़कों और बाज़ारों के बारे में बता रहे हैं। इसी तरह एक से अधिक का अर्थ बताने वाले शब्दों से नीचे दी गई तालिका को पूरा करें।

एक	अनेक
सड़क	सड़कों पर गड्ढे पड़े हैं।
घर	दीपावली पर .... की सफाई करते हैं।
फल	.... को धोकर खाओ
फूल	.... की खुशबू आ रही है।
शहर	यहाँ कई .... के लोग हैं।
गाँव	भारत .... का देश है।
पेड़	इन .... पर फूल और फल लगेंगे।

यह भी करें–

अजमेर के स्थलों के नाम	पुष्कर के स्थलों के नाम

- तुम भी कहीं घूमने गए होंगे। बातचीत करो कि

कहाँ–कहाँ गए	क्या – क्या तैयारी की	क्या–क्या देखा

- मेरा संकलन में दर्शनीय स्थलों के चित्र लगाएँ। उनके नीचे उनका परिचय भी लिखें।

मिलने पर मित्र का आदर करो, पीठ पीछे प्रशंसा करो और आवश्यकता के समय उसकी मदद करो। – अज्ञात

14 अब तक बहुत बह चुका पानी

उड़ता–उड़ता कौआ आया,
लिए चोंच में पूरी रोटी।
ताजी–ताजी, चुपड़ी–चुपड़ी
गोल–गोल थी मोटी–मोटी।

देखा लोमड़ ने उसको तब
बैठ चुका था जब डाली पर ।
लोमड़ तब मीठी बोली से
बोला गरदन ऊँची कर–कर।

मेरे राजा, कौए बेटे !
मैं तुझको पहचान गया हूँ।
आता–जाता रहा इधर मैं
कई वर्ष से, नहीं नया हूँ।

मुझे पता है उस कौए के
तुम हो बेटे या हो नाती।
जिस कौए ने मुझे सुनाई
यहाँ बैठकर मधुर प्रभाती।

बैठा था वह इसी डाल पर
बैठे हो अब तुम जिस पर।
मेरे कहने पर गाया था
उसने अपना गाना स्वर भर।
कौए भैया, तुम भी अपना
मीठा राग सुनाओ मुझको।
अपने दादा–नाना जैसी
अपनी कला दिखाओ मुझको।

कौआ हँसा, चोंच की रोटी
पंजे में पकड़ी जब पहले।
बोला लोमड़ दादा से यों
'' कान खोलकर दादा सुन ले।
पुरखों का अनुभव पाया है
क्यों दुहराऊँ वह नादानी।
अब न तुम्हारी दाल गलेगी
अब तक बहुत बह चुका पानी।''

निर्देश :– लोमड़ और कौए के संवाद विद्यार्थियों से अभिनय सहित करवाए जाएँ। यथासंभव कौए और लोमड़ के मुखौटे लगाकर भी संवाद प्रस्तुत किए जा सकते हैं। कठपुतली के माध्यम से भी इस पाठ का शिक्षण किया जा सकता है। कौए और लोमड़ की पारम्परिक कहानी की इस कहानी से तुलना कर अनुभव के आधार पर सीखने और चतुर बनने की बात पर बल दिया जाए। अन्तिम पंक्ति ''अब तक बहुत बह चुका पानी'' का भाव इस पंक्ति द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास करें – ''मेरी समझ न रही पुरानी।'' इस प्रकार की अन्य कविताओं और कहानियों से बालकों को अवगत कराया जाए।

अभ्यास कार्य

शब्द –अर्थ

नाती	–	संबंधी
प्रभाती	–	प्रातःकाल में गाया जाने वाला संगीत
पुरखों	–	पूर्वजों
नादानी	–	नासमझी

उच्चारण के लिए

चोंच, प्रभाती, स्वर, दुहराऊँ

सोचें और बताएँ

1. उड़ता – उड़ता कौआ आकर कहाँ पर बैठा ?
2. कौआ चोंच में क्या लेकर आया था ?
3. लोमड़ मीठी बोली में क्यों बोला ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(दाल, बह, लोमड़, मीठा)

(क) .... राग सुनाओ मुझको।

(ख) बोला .... दादा से यों।

(ग) अब न तुम्हारी .... गलेगी।

(घ) अब तक बहुत .... चुका पानी।

2. सही अर्थ के साथ मिलान करें

(क) कान खोलकर सुनना	काम नहीं बनना।
(ख) दाल नहीं गलना	चतुराई बताना।
(ग) अपनी कला दिखाना	ध्यान से सुनना।

3. कौए के दादा–नाना ने कौनसी कला दिखाई थी ?
4. रोटी की कौन–कौन सी विशेषताएँ बताई गई है ?
5. गरदन ऊँची कर लोमड़ ने क्या कहा ?
6. कौआ कौन–सी नादानी नहीं दोहराना चाहता था ?
7. ''अब तक बहुत बह चुका पानी'' इस कथन का क्या आशय है ?

भाषा की बात

- पाठ में आए विशेषण शब्दों की सूची बनाइए–

जैसे – ताजी ....

....

....

यह भी करें –

- कौए के स्थान पर आप होते तो क्या करते?
- पुरानी कहानी का शीर्षक ''चालाक लोमड़ '' हो तो इस कहानी का शीर्षक क्या हो सकता है ?
- लोमड़ चालाक जानवर है। लोमड़ संबंधी अन्य कहानियों को जानिए।

निर्देश :– मुखौटे लगाकर अभिनय करवाएँ

लोहा गरम भले ही हो जाए पर हथौड़ा तो ठंडा रह कर ही काम करता है।

–सरदार पटेल

15

अटल ध्रुव

राजा उत्तानपाद महाप्रतापी थे। उनकी दो रानियाँ थीं सुनीति और सुरुचि। दोनों के एक–एक पुत्र था। सुनीति के पुत्र का नाम ध्रुव और सुरुचि के पुत्र का नाम उत्तम था।

सुनीति बड़ी रानी थी परन्तु राजा छोटी रानी सुरुचि को ही मान देते थे। सुरुचि जैसा कहती, राजा वैसा ही करते। राज्य के सभी लोग सुरुचि का ही आदर करते थे। सुनीति को कोई नहीं पूछता था। सुनीति अपने पुत्र ध्रुव के साथ महल में अकेली रहती थी।

एक दिन राजा उत्तानपाद दरबार में बैठे थे। नृत्य–गान हो रहा था। सब प्रसन्न थे। राजकुमार उत्तम राजा की गोद में बैठा खेल रहा था। इतने में खेलते–खेलते ध्रुव भी वहाँ आ पहुँचा। पिता की गोद में उत्तम को खेलता देख उसकी भी गोद में बैठने की इच्छा हुई। वह दौड़ता हुआ गया और राजा की गोद में चढ़ बैठा।

पास ही खड़ी रानी सुरुचि को यह अच्छा नहीं लगा। उसने ध्रुव को राजा की गोद से उतार दिया। ध्रुव को उठाते हुए बोली, ''तुम यहाँ नहीं बैठ सकते। तुम्हारा यहाँ कोई अधिकार नहीं है।''

ध्रुव जिद करने लगा। सुरुचि बालक के भोलेपन पर क्रूरता से हँसी और बोली, ''तू मेरा पुत्र बनकर आता तो यहाँ बैठता। अपने पिता का प्रेम पाने के लिए तुझे दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। ध्रुव! तू जंगल में जा और भगवान का भजन कर।''

भरी सभा में ध्रुव को यह अपमान सहन नहीं हुआ। वह चुपचाप वहाँ से बाहर आया। दौड़ता हुआ माँ के पास गया और उसकी गोद में मुँह छिपाकर रोने लगा।

सुनीति घबरा गई। ध्रुव कुछ नहीं बोला। सिसक–सिसक कर रोता ही रहा। सुनीति के बार–बार पूछने पर उसने राज दरबार वाली घटना बताई। सुनीति की आँखों में आँसू आ गए। वह बोली, ''ध्रुव ! चिंता मत कर ईश्वर ने चाहा तो तेरी मनोकामना जरूर पूरी होगी।''

माँ की बात सुन ध्रुव भगवान से मिलने की जिद करने लगा। माँ ने उसे बहुत समझाया। जंगल का भय बताया, ध्रुव नहीं माना। वह जंगल में चला गया। जंगल में उसे कई तपस्वी मिले। उन्होंने भी ध्रुव को हठ छोड़ने का कहा, पर वह टस से मस नहीं हुआ। उसके दृढ़ निश्चय को देखकर एक तपस्वी ने उसे जप करने के लिए एक मंत्र दिया। ध्रुव यमुना के किनारे बैठकर मंत्र जाप करने लगा।

दिन बीतते गए। पहले वह कंदमूल खाकर रहने लगा। बाद में केवल पानी पीकर तथा अन्त में निराहार रहकर भजन करने लगा उसने एक पैर पर खड़े होकर जप किया। जप करते छह महीने बीत गए। मंत्र जाप के अलावा उसे कुछ याद नहीं रहा।

एक दिन उसे लगा कि किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा है उसने

आँखे खोलकर देखा। सामने ईश्वर खड़े थे। वह सिर झुकाकर प्रार्थना करने लगा। ईश्वर ने उसकी भक्ति से प्रसन्न हो वरदान दिया ''तुम्हारी मनोकामना पूरी हो।''

ध्रुव आशीर्वाद पाकर महल की ओर चल दिया नगर में उसका खूब स्वागत हुआ। राजा उत्तानपाद अपनी गलती पर बहुत पछताए वे सारा राजपाट ध्रुव को सौंप कर वन में चले गए। ध्रुव राजा बना। रानी सुनीति राजमाता बनी ।

अपने दृढ़ निश्चय तथा अटल भक्ति के कारण ध्रुव आज भी आदर के साथ याद किया जाता है।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

भय	–	डर
आशीर्वाद	–	आशीष
अटल	–	स्थिर
ईश्वर	–	भगवान
क्रूरता	–	निर्दयता
तपस्वी	–	तप करने वाला
मनोकामना	–	मन की इच्छा

उच्चारण के लिए

ध्रुव, आशीर्वाद, क्रूरता, तपस्वी, ईश्वर, प्रार्थना

सोचें और बताएँ

1. राजा उत्तानपाद की रानियों के क्या नाम थे ?
2. सुरुचि ने ध्रुव के साथ कैसा व्यवहार किया ?
3. सुनीति किस बात से घबरा गई थी ?

लिखें

1. 'और', 'तो', 'कि', 'पर' आदि शब्द लगाकर वाक्य पूरे करो
   (क) ईश्वर ने चाहा .... तेरी मनोकामना पूरी होगी।
   (ख) तपस्वी ने ध्रुव को हठ छोड़ने को कहा .... वह टस से मस नहीं हुआ।
   (ग) ध्रुव दौड़ता हुआ गया .... राजा की गोद में बैठ गया।
   (घ) सुरुचि ने कहा .... अपने पिता का प्रेम पाने के लिए तुझे दूसरा जन्म लेना पड़ेगा।
2. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें
   (क) राजा उत्तानपाद .... राजा थे। (महाप्रतापी / अत्याचारी)
   (ख) सुनीति के पुत्र का नाम .... था। (उत्तम / ध्रुव)
   (ग) ध्रुव तपस्या करने .... गया। (जंगल / मंदिर)
   (घ) ईश्वर ने उसकी .... से प्रसन्न हो वरदान दिया। (भक्ति / शक्ति)
   (ङ) ध्रुव राजा बना और रानी .... राजमाता बनी। (सुनीति / सुरुचि)
3. ध्रुव किसका पुत्र था ?
4. सुनीति ध्रुव के साथ महल में अकेली क्यों रहती थी ?
5. सुरुचि ने राजा की गोद से ध्रुव को क्यों उतारा ?

6. ध्रुव को जंगल में क्यों जाना पड़ा ?
7. ध्रुव ने ईश्वर की भक्ति कैसे की ?

भाषा की बात

- निम्नलिखित शब्दों के जोड़े बनाएँ।

नाना	–	नानी
मौसा	–	....
चाचा	–	....
मामा	–	....
राजा	–	....

- नए शब्द बनाएँ

चढ़	–	चढ़ना
पढ़	–	....
सुन	–	....
चल	–	....
कर	–	....

यह भी करें –

- इस कहानी को याद करें और सुनाएँ।
- शिक्षक की सहायता से विद्यार्थियों द्वारा कहानी को अभिनय के रूप में प्रस्तुत करें।

> वाणी चाँदी है, मौन सोना है, वाणी पार्थिव है, पर मौन दिव्य। –कहावत।

केवल पढ़ने के लिए

पतंगों का मौसम

मौसम आज पतंगों का है
नभ में राज पतंगों का है
इंद्रधनुष के रंगों का है
मौसम नई उमंगों का है।

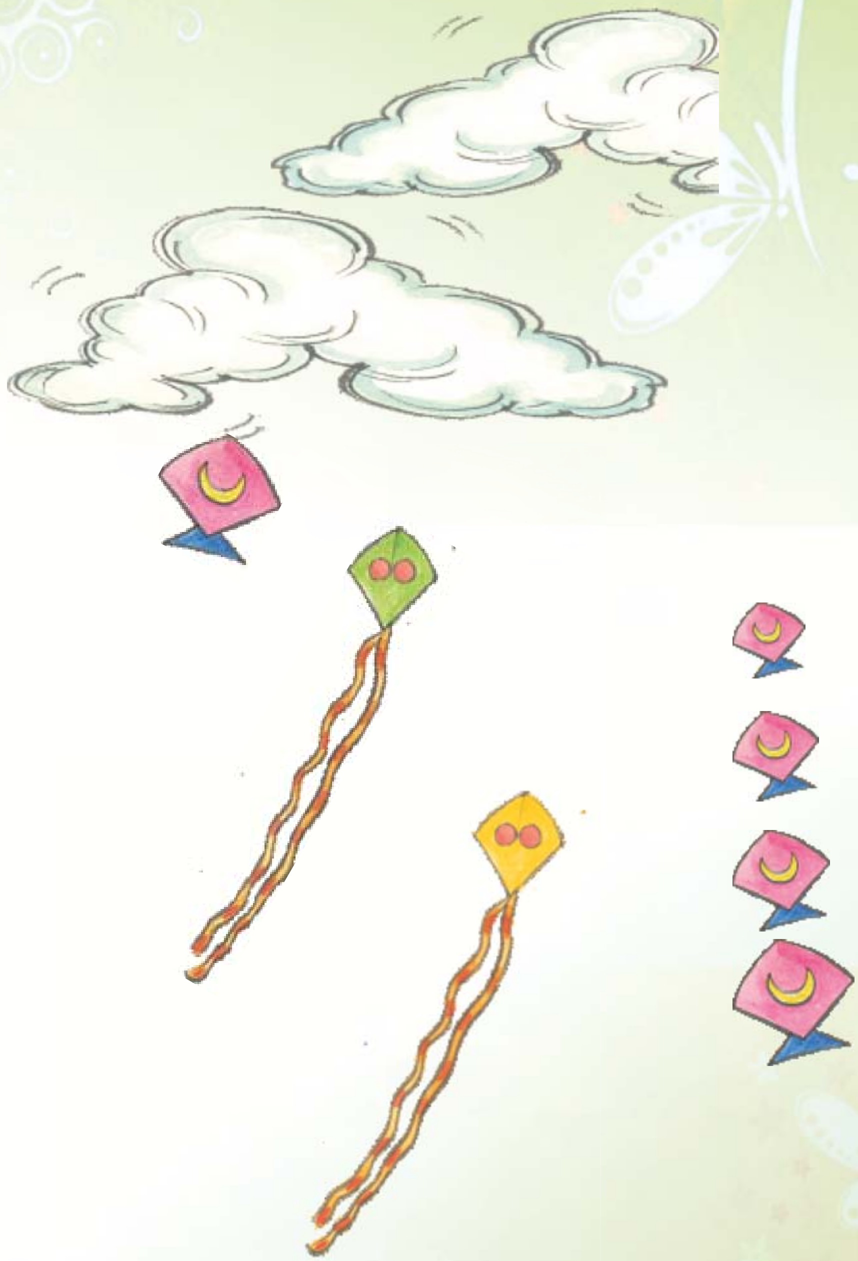

निकले सब ले डोर–पतंगें
सुंदर–सी चौकोर पतंगें
उड़ा रहे कर शोर पतंगें
देखो चारों ओर पतंगें।

उड़ी पतंगें बस्ती–बस्ती
कोई महँगी, कोई सस्ती
पर न किसी में फूट–परस्ती
उड़ा–उड़ा सब लेते मस्ती।

चली डोर पर बैठ पतंगें
इठलाती–सी ऐंठ पतंगें
नभ में कर घुसपैठ पतंगें
करें परस्पर भेंट पतंगें।

हर टोली ले खड़ी पतंगें
कुछ छोटी कुछ बड़ी पतंगें
आसमान में उड़ीं पतंगें
पेच लड़ाने बढ़ी पतंगें।

कुछ के छक्के छूट रहे हैं
कुछ के डोरे टूट रहे हैं
कुछ लंगी ले दौड़ रहे हैं
कटी पतंगें लूट रहे हैं।

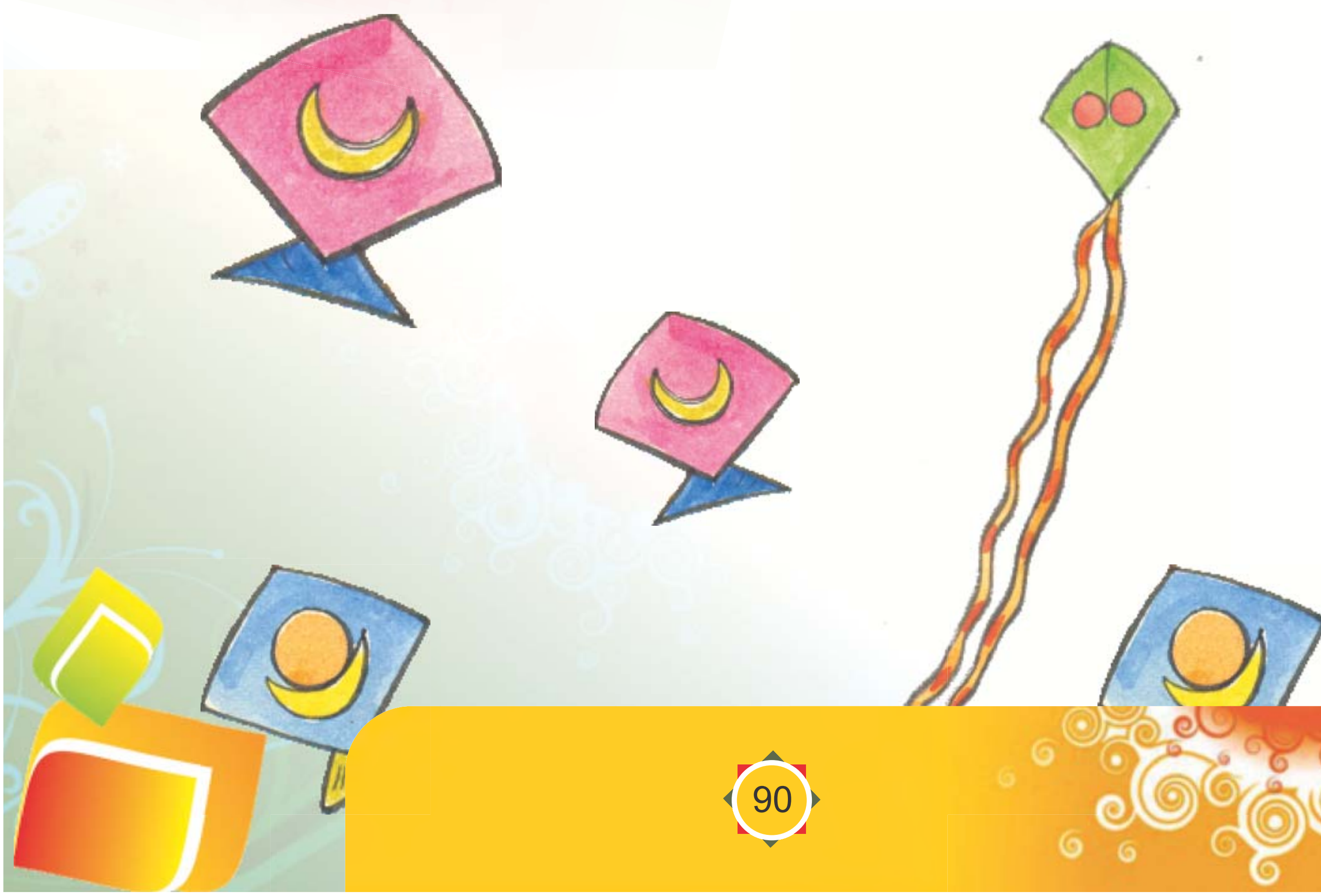

16 बताओ मैं कौन हूँ

मैं इस धरती पर उत्पन्न नहीं हुई, बल्कि पैदा की गई हूँ। मैंने सबकी सेवा करने का व्रत लिया है, इसलिए मैं किसी के भी काम को मना नहीं करती। कोइ भी काम हो, मैं तुरंत करने को तैयार रहती हूँ।

मैं अंधेरे में उजाला करती हूँ, पर मोमबत्ती नहीं हूँ। गर्मी में ठंडक पहुँचाती हूँ पर हवा नहीं हूँ। सर्दियों में गर्मी देती हूँ, पर आग नहीं हूँ। पंखा करने, संदेश पहुँचाने, सफाई करने, छाछ बिलौने जैसे कई कार्य करती हूँ, पर किसी की नौकरानी नहीं हूँ। काम से मैं कभी नहीं थकती, दिन–रात काम करती रहती हूँ। अब तो आप समझ ही गए होंगे कि मैं कौन हूँ ? यदि नहीं जानते तो लो और बताती हूँ।

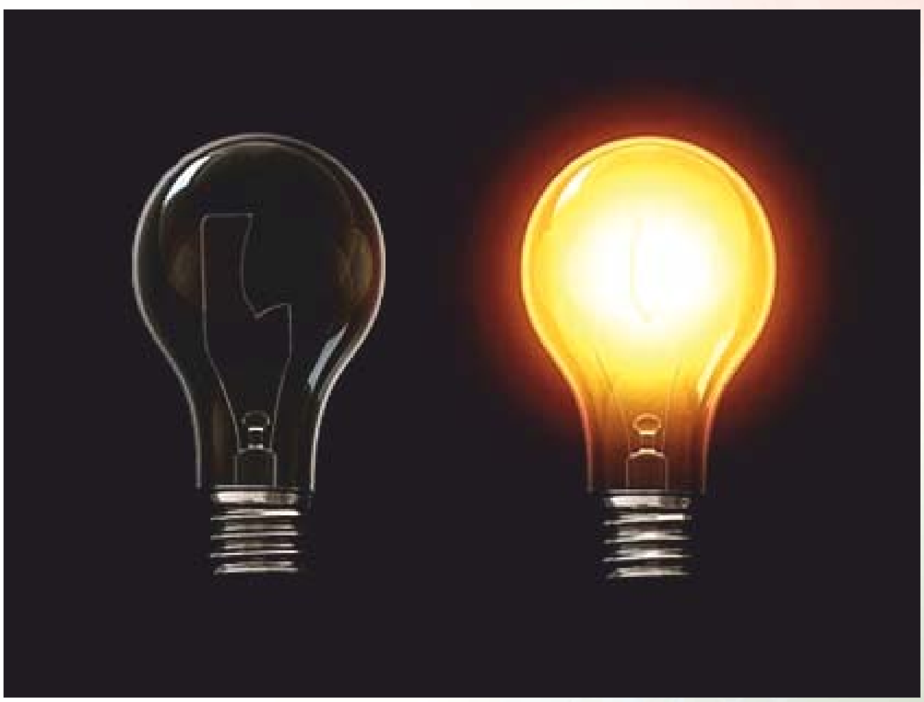

मैं चक्की चलाती, कपड़े धोती, जमीन से पानी खींचती, गाने सुनाती,

दूरदर्शन दिखाती, अखबार छापती, ऐसा कोई काम नहीं जो मैं नहीं करती हूँ। सभी लोग मेरा आदर करते हैं। जो लोग मेरी परवाह नहीं करते, उन्हें मैं सबक भी सिखाती हूँ।

एक बार की बात है, एक मैदान में समारोह का आयोजन हो रहा था। चारों तरफ रोशनी थी। लोग आ–जा रहे थे। बैंड बज रहा था। पंडाल में लोग खाना खा रहे थे। पंडाल की सारी शोभा का कार्य मुझे ही सौंपा गया था। मैं भी चारों तरफ दौड़–दौड़ कर कार्य कर रही थी। कुछ जगह मेरा दुरुपयोग हो रहा था। यह देख कर मुझे क्रोध आ गया और मैं एकदम वहाँ से चली गई। मेरे जाते ही सब तरफ अफरा–तफरी मच गई। लोग इधर–उधर दौड़ने लगे, चिल्लाने लगे। कुछ लोग मुझे ढूँढने लगे। जब वे बहुत परेशान हो गए तो मुझसे उनका दुःख नहीं देखा गया और मैं वापस आ गई। मेरे वापस आते ही खुशी की लहर दौड़ गई। लोगों ने मेरा महत्त्व समझ लिया था।

मुझे सुस्ती पसंद नहीं है। मेरी चाल बहुत तेज है। मैं धातु के तारों में प्रवाहित होकर पल भर में हजारों किलोमीटर तक पहुँच जाती हूँ। मेरा प्रवाह रबर, लकड़ी या स्विच ही रोक सकता है। अन्यथा मैं हवा से बातें करती हूँ।

मैं लोगों की पक्की मित्र हूँ फिर भी वे मुझे छू नहीं सकते।

यदि लोग मेरा दुरुपयोग रोकेंगे तो लम्बे समय तक मैं उनकी सेवा करती रहूँगी। मुझसे जरूरत के अनुसार ही काम लेंगे तो सभी लाभ में रहेंगे।

अब तो जान ही गए होंगे कि मैं बिजली हूँ।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

उत्पन्न	–	पैदा होना
समारोह	–	जलसा, उत्सव
शोभा	–	सुंदरता
प्रवाहित	–	बहना
सदुपयोग	–	उचित उपयोग
दुरुपयोग	–	अनुचित उपयोग
अफरा–तफरी	–	गड़बड़ होना
खुशी की लहर दौड़ना	–	सबका प्रसन्न होना

उच्चारण के लिए

उत्पन्न, बल्कि, चक्की, पंडाल, चिल्लाने, महत्त्व, अन्यथा

सोचे और बताएँ

1. समारोह का आयोजन कहाँ हो रहा था ?
2. पंडाल में लोग क्या कर रहे थे ?
3. अंधेरे में उजाला कौन करती है ?

लिखें

1. सही कथन पर सही तथा गलत कथन पर गलत का चिह्न लगाएँ–

   (क) मैं अंधेरे में उजाला करती हूँ। ( )

   (ख) दिन–रात काम करने से मैं थक जाती हूँ। ( )

   (ग) मैं धातुओं के तारों में प्रवाहित नहीं होती। ( )

   (घ) मेरा प्रवाह रबड़ रोक सकता है। ( )

   (ङ) मेरी चाल बहुत धीमी है। ( )

2. बिजली क्या काम करती है ?
3. बिजली किसमें प्रवाहित होती है ?
4. बिजली के दुरुपयोग से क्या आशय है ?
5. यदि बिजली न हो तो क्या होगा ?

भाषा की बात

- पाठ में 'दुरुपयोग' और 'सदुपयोग' शब्द आएँ हैं। इन दोनों शब्दों में मूलशब्द 'उपयोग' है तथा 'दुर्' / 'सद्' पूर्व में जुड़कर उपर्युक्त शब्द बने हैं। आप भी निम्नलिखित शब्दों को जोड़कर नया शब्द बनाएँ–

  दुर् + उपयोग – दुरुपयोग सद् + उपयोग – सदुपयोग

  दुर् + आचरण – .... सद् + आचरण – ....

  दुर् + आचार – .... सद् + आचार – ....

- 'दुरुपयोग' शब्द 'सदुपयोग' शब्द का विपरीतार्थी भी है। इसी प्रकार 'दुर्' और 'सद्' से बनने वाले पाँच विपरीतार्थी शब्द लिखें

  जैसे – दुर्गुण – सद्गुण

- बिजली के दुरुपयोग एवं सदुपयोग के बारे में अपनों से

बड़ों से बात कर बिजली के उपयोग पर पाँच वाक्य लिखें।

यह भी करें

- आप के घर तथा पड़ोस में बिजली से किए जाने वाले कार्यों को देखें।
- बिजली से चलने वाले उपकरणों के नामों की एक सूची बनाएँ

> कुबेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो निर्धन हो जाता है।
>
> —चाणक्य

चित्रकथा

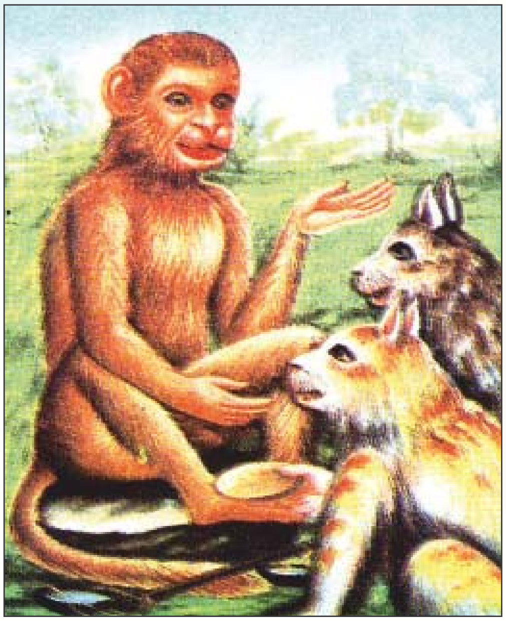

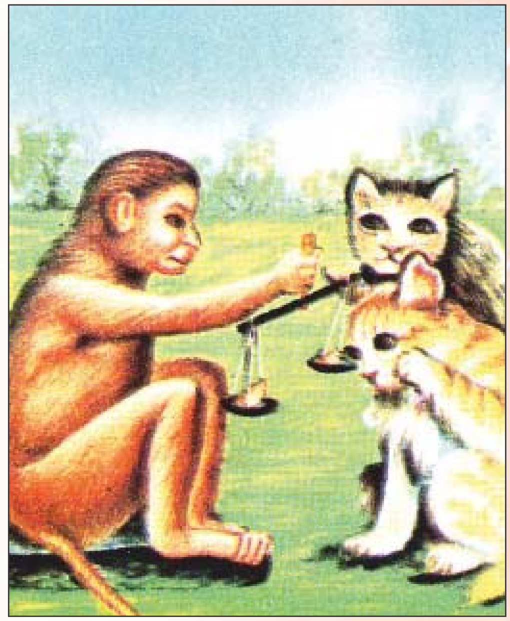

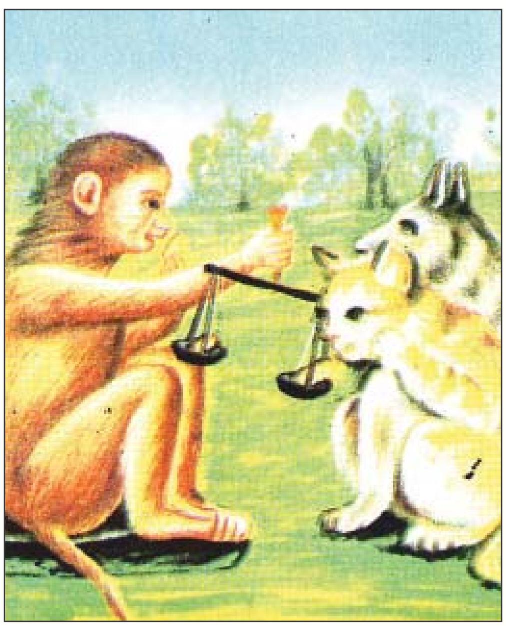

निर्देश– शिक्षक/शिक्षिका चित्रों की सहायता से कहानी बनवाएं व उस पर चर्चा करें।